یہ کتاب اصلا سراج
المحققین حضرت مولانا
محمد سراج الحق صاحب
سراؔج مچھلی شہری نور
اللہ مرقدہ کی ہے.
لیکن جد امجد رحمۃ اللہ
علیہ نے یہ کتاب اپنے
فرزند اصغر مولانا عبد
العلیم عیسیٰ صاحبؒ کے
نام سے شائع کی تھی.
احمد القدوس حمید
نظاؔمی

संसार गुरु

बाबा अलीम दास

संसार गुरु

(मुसलमानों के नबी)

लेखक

बाबा अलीमदास

पब्लिशर—जामी ब्रादर्स

मूल्य ।।=)

सूची

दीक्षित प्रेस

प्रयाग

पहिला अध्याय

अंतिम महात्मा बुद्ध और फारक़लीत

आज से कोई ढाई हज़ार वर्ष पहिले इस भारतवर्ष के बिहार प्रान्त (मगध देश) में महात्मा गौतम बुद्ध ने संसार को सत्य और नेकी का पाठ पढ़ाया। जब उनके जीवन की अंतिम घड़ी आई और उनकी सांस उखड़ने लगी तो उनके प्रिय शिष्य "नन्दा" ने अपने गुरु महात्मा बुद्ध के पांव पकड़ लिए। नन्दा गुरु के वियोग के दुख से बुरी तरह रो रहा था। उसने बुद्धजी से पूछा—"महाराज ! आपके पीछे इस संसार को फिर कौन ऐसी नेकी और सत्य का पाठ पढ़ाएगा"?

महात्मा बुद्ध—नन्दा ! न मैं इस संसार में पहिला बुद्ध हूं और न अंतिम बुद्ध हूं। इस संसार को सत्य तथा नेकी की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और "बुद्ध" आयेगा। वह पवित्रात्मा होगा। शुद्ध हृदय होगा। ज्ञान और बुद्धि से परिपूर्ण, बरकतों वाला, सबसे बढ़कर विद्वान तथा समस्त जनता का अनुपम नेता होगा। जिस प्रकार मैंने संसार को अमिट सत्य की बातें बताई हैं उसी प्रकार वह भी सारे संसार

को सत्य की शिक्षा देगा। वह सारे संसार को एक ऐसा जीवन-मार्ग दिखलायेगा जो शुद्ध (बेमेल) भी" और पूर्ण भी होगा।

नन्दा—महाराज ! हम उसको कैसे पहिचान सकेंगे ?

[Gospel of Budha By Carus P. 217]

म० बुद्ध—नन्दा ! उसका नाम मेतरई होगा।

मित्रो ! तुम जानते हो कि यह बुद्ध जी कौन थे ? यह कपिलवस्तु के प्रतापशाली राजा शुद्धोदन के युवराज थे। इनका असली नाम सिद्धार्थ था। राजसी ठाठ-बाट और सुख के होते हुए इनका ध्यान ईश्वर की ओर ऐसा लगा, कि इन्होंने राज-पाट छोड़ देशवासियों की आत्मा की शान्ति और मुक्ति का उपदेश ईश्वर से ग्रहण करके संसार को दिया। इसी कारण इनको लोग बुद्ध या बुद्धा कहने लगे। बुद्ध का अर्थ बुद्धि वाले, अक़्लवाले तथा समझ वाला है। महात्मा बुद्ध ने नन्दा से जो कुछ बातें कहीं उनका सारांश यह है:—

(१) इस संसार में मुझ (महात्मा बुद्ध) से पहले बहुत से बुद्ध आए अर्थात् ज्ञान और बुद्धि वाले मनुष्य आए और भविष्य (आगे) में भी आएंगे।

(२) मेरे पीछे एक और बड़े बुद्ध आएंगे। उनके आने की खबर, उनका नाम, तथा उनकी विशेषताएं मैं तुमको पहिचान के लिए बताए देता हूं:—

(१) उनका नाम मेतरई (दयावाला) होगा।

(२) वह बुद्धि और ज्ञान से परिपूर्ण होगा। वह बुद्ध होने में मेरे ही समान होंगे।

(३) उनके आने का एक समय ईश्वर के यहां से निश्चित है। वह "अंतिम बुद्ध" होंगे।

(४) उनकी शिक्षा शुद्ध (बेमेल) होगी, उसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो सकेगी।

(५) वह भी उसी प्रकार की अच्छी बातें बताएंगे। जिस प्रकार की बातें मैंने संसार को बताई हैं। अर्थात हम और वह दोनों एक ही गुरु के शिष्य होंगे।

(६) वह सारे मनुष्यों के नेता होंगे।

(७) उनकी शिक्षा से संसार को जीवन व्यतीत करने का एक पूर्ण नियम मिलेगा।

नोट—मुसलमान हिकमत (बुद्धि) से भरपूर आदमी को नबी कहते हैं।

यह तो हिन्दुस्तान के एक महात्मा और बुद्ध ने यहां के रहने वालों को अपनी भाषा (संस्कृत-पाली आदि) में बताया। किन्तु इनसे चार-पांच सौ वर्ष पीछे शाम के मुल्क (सीरिया) में फ़िलिस्तीन प्रान्त के एक प्रसिद्ध नगर यरोशिलम के एक महात्मा और बुद्ध अर्थात हज़रत ईसा पैग़म्बर ने भी जब वह इस संसार से जा रहे थे अपने शिष्यों से यही कहा था:—

"मैं आसमानी बाप से (ईश्वर) से प्रार्थना करूंगा कि

वह तुम्हें दूसरा "फारक़लीत" दे"। वह तुम्हें सारी बातें सिखावेगा, और सारी बातें जो मैंने तुमसे कही हैं, याद दिलावेगा।...जब वह पैदा हो तो तुम उस पर ईमान लाना...इस संसार का नेता आने वाला है और मुझमें उसकी जैसी कोई बात नहीं...वह मेरे लिए गवाही देगा।... वह सारी सचाई का मार्ग तुमको दिखलायेगा। किसलिए कि वह अपनी ओर से न कहेगा। जो कुछ वह सुनेगा, वही कहेगा, और तुम्हें आकाश-वाणी की बातें बतावेगा, और मेरी बड़ाई बयान करेगा।...[Bible John 14 : 16 :]

यदि तुम हिन्दुस्तान के महात्मा गौतम बुद्ध और यरोशिलम के पैगम्बर हज़रत ईसा मसीह की बातें एक साथ मिलाकर देखो तो तुमको ज्ञात होगा कि दोनों महापुरुषों ने एक ही बात कही है। दोनों ने बताया है कि पीछे एक बड़े ज्ञानी महापुरुष आने वाले हैं। दोनों ने बताया कि वह आने वाले (महापुरुष) भी वही बातें (ईश्वर से सीखकर) संसार को बताएंगे जो उन दोनों ने बताई हैं। मानों यह तीनों एक ही गुरु के समान शिष्य हैं।

मित्रो! विचार करने योग्य बात है कि यह दोनों महापुरुष जिस मेतरई का जिस फारक़लीत तथा सारे संसार के नेता का, जिस पूर्ण जीवन के नियम बताने वाले महापुरुष का ज़िक्र कर रहे हैं आखिर वह कौन हैं। महात्मा बुद्ध के पीछे हिन्दुस्तान में और हज़रत ईसा के पीछे यरोशिलम में और न केवल

हिन्दुस्तान और यरोशिलम में वरन् सारे संसार में वह कौन से महापुरुष आए हैं जिनमें एक साथ उपरोक्त सारी बातें पाई जाती हों।

आओ हम तुम्हें उन महापुरुष महात्मा का नाम तथा पता विवरण सहित बताएं।

(१) उनका नाम अहमद और मोहम्मद था। यह अरब देश के प्रमुख नगर "मक्का" में पैदा हुए थे। मदीना में उनका देहान्त हुआ। हम आगे चल कर उनको सिर्फ हज़रत या आँ हज़रत या हुज़ूर कहेंगे। उन पर ईश्वर के सैकड़ों दूरूद और सलाम हों।

(२) वही अंतिम नबी, युक्ति और ज्ञान से परिपूर्ण अर्थात् अंतिम बुद्ध हैं।

(३) उनका नाम "रहमते आलम" (मेतरई) है।

(४) उन्हीं महर्षि का नाम फारक़लीत अर्थात् 'प्रशंसा योग्य' है। फारक़लीत, अहमद तथा मोहम्मद का यूनानी अनुवाद है।

(५) वह पढ़े-लिखे न होने पर भी सारे संसार को एक सम्पूर्ण जीवन का नियम बताने वाले हैं।

(६) उन्हीं ने संसार को वही अमिट सच्ची शिक्षा दी जिसको बुद्ध जी और हजरत ईसा ने दी थीं। अर्थात् केवल उन्हीं के यहाँ तुमको महात्मा गौतम बुद्ध की और हज़रत ईसा

की शुद्ध शिक्षाएं मिलेंगी। मानो ये तीनों गुरु समान भाई-भाई हैं।

(७) आज तुमको केवल उन्हीं की शिक्षा शुद्ध और बेमेल मिल सकेगी।

(८) उन्हीं की जबान से संसार ने हज़रत ईसा का ज़िक्र और गवाही उनकी मां की शुद्धता तथा मान-मर्यादा की कहानी सुनी। और न केवल एक हज़रत ईसा की वरन् सारे संसार के प्रत्येक समय के होने वाले बुद्धों (पैग़म्बरों) की गवाही और मान-मर्यादा की कहानी सुनी। उनमें से कुछ थोड़े से पैगम्बरों का ज़िक्र तो नाम के साथ किया शेष का उनके कार्य और शिक्षा के साथ। उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो इन सब का आदर न करेगा उसने मानो मेरा आदर भी न किया। मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं।

मित्रो! सोचो तो कि आज इस अंतिम बुद्ध (हज़रत मोहम्मद साहब) की शिक्षा के शुद्ध और बेमेल होने और उनके बताए हुए जीवन के नियम से सम्पूर्ण होने ही के कारण यह दशा है कि चाहे यूरुप वाले हों चाहे एशिया वाले, चाहे हिन्दुस्तानी हों चाहे यूरुपीय, चाहे हज़रत ईसा के अनुयाई हों चाहे महात्मा गौतम बुद्ध के, सभी अपने जीवन की आवश्यकताओं में उसी अंतिम बुद्ध (हज़रत मुहम्मद साहब) के सम्पूर्ण जीवन नियम ही से एक-एक दो-दो नियम लेकर सदैव अपनाते जाते हैं और इस प्रकार उसको अपने कार्य से सारे संसार

का नेता सिद्ध करते जाते हैं। अनाथ स्त्रियों को निर्दई पतियों के चंगुल से छुड़ाने का नियम (तलाक), विधवा के पुनर्विवाह का नियम, छूतछात तोड़क नियम सिवा उसी अंतिम बुद्ध (हजरत मुहम्मद साहब), के पूर्ण और बेमेल जीवन नियम के संसार में कहाँ से आया ?

यदि किसी सभ्य देश और नगर का कोई पढ़ा-लिखा मनुष्य लोगों को कुछ अच्छी बातें बताने लगे तो उसने कौन सा बड़ा और आश्चर्यजनक काम किया। हां अशिक्षित और असभ्य निर्धन देश का एक अनपढ़ मनुष्य (हजरत मुहम्मद साहब) उठता है और कुल २३ वर्ष में पूरे असभ्य देश को सभ्य बना देता है। परतंत्र देश को स्वतन्त्र और विजयी बना देता है। निर्धन और धनवान को एक धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है। गुलामी की प्रथा को दूर करके गुलामों को ऊँचे स्थान पर लाता है। शराब, व्यभिचार, जुआ तथा व्याज को देश से जड़-मूल से उखाड़ फेंकता है।

लूट-मार की प्रथा को मिटा कर देश में सुख-शान्ति स्थापित करता है, और अपनी एक नई सभ्यता और नियम को संसार के सामने पेश करता है। यहाँ तक कि उसके अनुयाई आप से आप सारे संसार के नेता मान लिए जाते हैं। यह आश्चर्यजनक बात सोचने की नहीं तो और क्या हो सकती है ?

दूसरा अध्याय

जीवन-चरित्र

आज से कोई ५ हज़ार वर्ष पहिले एक पैगम्बर (बुद्ध) फिलिस्तीन में पैदा हुए थे, जिनका नाम "हज़रत इब्राहीम" था। उनको ब्राहीम, ब्राहाम तथा ब्रह्म आदि भी कहते थे। उन्होंने ईश्वर की आज्ञा से अपनी एक स्त्री और बच्चे को लेकर अरब की यात्रा की और मक्का नगर में ईश्वर की आज्ञा से एक पूजा-गृह (हैकल, मंदिर) बनाया। उसका नाम "काबा" रखा। उस समय से उस पूजा गृह के पुरोहित सदैव से उन्हीं के वंशज के लोग होते आए। आज से १४ सौ वर्ष पूर्व इसी घराने के पुरोहित ने जिनका नाम शैबा और अब्दुल मुत्तालिब था अपने एक बेटे अब्दुल्लाह का विवाह बड़े प्रेम से मक्का के एक प्रतिष्ठित घराने में किया। अभी व्याह को सात ही महीने हुए थे कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह व्यापार करने के लिए शाम प्रदेश में गए थे। लौटते समय मार्ग में बीमार पड़ गए और अपनी ननिहाल मदीना-नगर में पहुँचते-पहुँचते उनका स्वर्गवास हो गया। वहीं उनकी अंतिम क्रिया (दफ़न) हुई। शैबा को अपने इस बेटे के मरने का बड़ा दुख हुआ, मगर ईश्वर की इच्छा, यही थी। वह कर ही क्या सकते थे। धैर्य कर के रह गए। पता यह लगा कि वधू गर्भवती है अतः उसकी देखरेख

भली प्रकार करने लगे। दो महीने पश्चात ईश्वर ने चन्द्रमा के समान सुन्दर एक बेटा दिया। जो स्वस्थ, मनोहर और हंसमुख था। उस लड़के का नाम "मुहम्मद" रखा। यह शुभावसर २० अप्रैल सन् ५७१ ई० सोमवार के दिन प्राप्त हुआ। शैबा ऐसे पोते को पाकर बहुत प्रसन्न हुए और देश के नियम के अनुसार अपने यतीम मनोहर पुत्र को देहात की एक नेक अन्ना (दूध पिलाने वाली) के सपुर्द किया ताकि वह इनको देहात की खुली और स्वच्छ हवा में रखे। दूध पिलाए और एक-एक महीने पश्चात बच्चे को लाकर विधवा माता और बूढ़े दादा को दिखा जाया करे। अन्ना इस बच्चे को बहुत प्यार करती थी। जिस दिन से यह बच्चा उनके घर पहुँचा, उनका घर समस्त सामग्रियों से सम्पन्न रहने लगा।

चार वर्ष पश्चात अन्ना जिनका नाम "हलीमा" था इस धरोहर को मक्का में लाकर उनकी माँ को दे गई। मां बच्चे को पाकर प्रसन्न हो गई। उस देश में पढ़ने की प्रथा थी और न कोई प्रबन्ध ही था। अतः आपके पढ़ने का कोई प्रबन्ध न हो सका। जब आप ६ वर्ष के हुए तो माँ आपको लेकर अपने मैका मदीना गईं। वहीं आपने तैरना सीखा। कुछ ही दिनों पीछे वहीं आपकी माँ का देहान्त हो गया। बूढ़े दादा को जब खबर मिली तो उन्होंने पोते को मक्का बुलाकर अपने साथ रखा और पालन-पोषण करना आरम्भ किया, किन्तु वह भी २ वर्ष से अधिक जीवित न रहे। अनाथ पोता ८ वर्ष की आयु में दादा

की कृपा से भी वंचित हो गया। मरते समय शैबा ने अपने एक बेटे "अबूतालिब" को बुला कर हजरत मुहम्मद को पालन-पोषण की बड़ी ताकीद की। उन्होंने वचन दिया कि मैं मरते समय तक आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।

अब हज़रत का पालन-पोषण उनके चचा अबूतालिब करने लगे। उनके स्वयं कई बच्चे थे। उनके घर में पहिले खाने-पीने का बड़ा कष्ट था, किन्तु जिस दिन से इस अनाथ परन्तु शुभ भतीजे को लाए घर में हर प्रकार का सुख प्राप्त होने लगा। बचपन में हज़रत कभी बुरे खेलों के पास तक नहीं गए। आप बलवान और वीर थे। दौड़ने-धूपने और तैरने में दक्ष थे। लड़ाई में कुशल थे। अपने देशवासियों की भाँति कभी मूर्ति-पूजा नहीं की। आपने कभी जुआ नहीं खेला, कभी शराब नहीं पी, कभी ज़बान से गाली या अपशब्द नहीं निकाला। आप बचपन ही से सदैव सत्य बोलते थे आपकी बातें और स्वभाव ऐसे थे कि सब का दिल लुभा लेते थे। आपके पिता भी व्यापार करते थे, आपको भी व्यापार का बड़ा शौक था। जब आपकी अवस्था १३ वर्ष की हुई तो आपने मेहरबान चचा से आज्ञा मांगी कि व्यापारी काफिले के साथ-साथ स्वयं अन्य देशों की यात्रा करें और व्यापार में भाग लें। चचा ने प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दी। कुछ दिनों पीछे एक व्यापारी काफिला शाम प्रदेश को जाने लगा तो अबूतालिब स्वयं यात्रा की इच्छा की और भतीजे को लेकर शाम को

चले। यह पहिली बार हजरत अपने देश से बाहर निकले थे। इस यात्रा में आपके बचपन के साथी और एक प्रसिद्ध सौदागर के बेटे "अबूबकर" भी साथ थे। कुछ दिनों पीछे आप काफिले के साथ मक्का लौट आए। यात्रा के समय चचा इनको कही अकेले आने-जाने नहीं देते थे। जब इनकी आयु १५, १६ वर्ष की हुई उस समय एक लड़ाई दो परिवारों में हुई, जो फैलते-फैलते कई परिवारों में फैल गई और जिसका सिलसिला सन् ५८० ई० से सन् ५६० ई० तक दस वर्ष तक लगातार रहा। इस लड़ाई का नाम 'फुज्जार' था आप अपने परिवार कुरैश के साथ होकर बड़ी वीरता से अपने बैरी परिवार "कैस" से लड़े। अंत में सन् ५६० ई० में जब आपकी आयु बीस वर्ष की थी इस लड़ाई का अन्त हुआ। इसमें क़ुरैश को विजय प्राप्त हुई।

इस लड़ाई में आपने देखा कि देश में किस प्रकार गरीब पीसे जा रहे हैं। दीन और दुखियों पर दया करने वाला कोई नहीं है। देश में अधिकांश लूट-मार मची हुई है। अत्याचारी लोगों ने मुसाफिरों को सताना और परिवारों में फूट डालना मचा रखा है। यह सारी बातें देखकर आपको बड़ा दुख हुआ। आपने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई। देश में शान्ति का प्रचार करना आरम्भ किया। आपके एक चचा "जुबेर" ने जिनका मक्के में बड़ा प्रभाव था आपका साथ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ दूसरे अच्छे लोगों ने भी आपका साथ दिया। सब

ने मिल कर एक शान्ति कमेटी बनाई, जिसका नाम "हिल्फुल-फ़जूल" रखा। इस कमेटी का उद्देश देश में शान्ति स्थापित करना और गरीबों का साथ देकर अत्याचारियों से मुकाबिला करना, मुसाफिरों की रक्षा करना तथा लड़ने वालों में संधि कराना था। यह सेवा-दल केवल दो वर्ष तक जीवित रहा परन्तु जब तक जीवित रहा अपना उद्देश पूरा करता रहा। हजरत साहब अपनी अंतिम अवस्था में भी इस सेवा और शान्ति-दल को याद करते थे।

आपको व्यापार की जो रुचि थी वह बराबर आपको अन्य देशों में जाने के लिये उभारती मगर आपका हाथ खाली था, अतः ऊंचे दर्जे का व्यापार तो कर ही नहीं सकते थे हां छोटा-मोटा व्यापार आप मक्का में सदैव करते रहे। किन्तु वह इतना छोटा था कि उसका हाल बहुत कम मशहूर है, परन्तु इस छोटे व्यापार में भी एक घटना ऐसी विचित्र घटी कि जिससे आपके आचरण की बड़ा चर्चा हुई।

आप सत्यवादी तो बचपन ही से थे, और इसको प्रत्येक आदमी जानता था। यहां तक कि आपको बच्चे, बूढ़े सब आपका नाम लेकर पुकारने के बजाय "सादिक" (सच्चा) और 'अमीन" (ईमानदार) कह कर पुकारते थे। उपरोक्त घटना इस प्रकार घटी कि एक दिन आप बाजार में बैठे माल बेच रहे थे कि एक आदमी जिसका नाम "अबूहम्मसा" था आया, और आपसे कोई चीज़ खरीदी, पर उस समय उसके

पास उसके दाम पूरे न थे। उसने कहा ऐ सादिक! मेरे पास इस वक्त दाम कुछ कम है। मैं यह चीज़ लिए जाता हूँ जो कुछ दाम मौजूद है इसे ले लो मैं घर जाकर शेष दाम लेकर अभी आता हूँ यहीं ठहरे रहना आपने इसको स्वीकार कर लिया। अबूहम्मसा वह चीज़ लेकर घर गया और दैव-योग से घर जाकर किसी काम में ऐसा फंसा कि दाम ले जाकर देना भूल गया। उधर हज़रत बाजार में उसका इंतजार करते रहे। तीसरे दिन कहीं जाकर उसे ख्याल आया कि मैं फलां व्यक्ति से वचन दे आया था कि मैं दाम अभी लाता हूँ वह बहुत लज्जित हुआ पछताया और घबराया हुआ दाम लिए सीधा उसी बाजार में उसी जगह पहुंचा जहाँ उसने वह चीज ख़रीदी थी। वह जानता था कि आप वादा के बड़े सच्चे और बात के बड़े धनी हैं। वह अपने नियम के पक्के हैं। वह घर या किसी दूसरी जगह कदापि न गए होंगे। वह उसी स्थान पर मेरी राह देख रहे होंगे। वहां पहुँचा तो सचमुच हज़रत साहब को वहीं बैठा पाया वह बहुत लज्जित होकर बोला। "ऐ सादिकुलअमीन ईश्वर के लिए मेरा अपराध क्षमा कर दो, मैं बिलकुल भूल गया। तुम्हें मेरे कारण बड़ा कष्ट हुआ"। आपको यथार्थ में कष्ट हुआ था। छोटी-मोटी तकलीफ होती तो आप उसको ज़बान पर भी न लाते परन्तु दो दिन तक लगातार राह देखना कोई मामूली तकलीफ न थी। आपने उससे कहा—तो बस इतना कि हाँ "ऐ आदमी

तूने यथार्थ मुझे बहुत तकलीफ दिया।"

उस समय आपकी उम्र लगभग २४ वर्ष की थी। इस घटना से शहर के लोगों में आपके पक्के आचरण और बात के धनी होने की चर्चा फैल गयी।

तीसरा अध्याय

विवाह

आप बचपन ही से बहुत शरमीले थे। अब यद्यपि आप युवक, स्वस्थ, वीर तथा सुन्दर थे परन्तु आपने कभी भूल कर भी किसी स्त्री को ओर आँख उठाकर नहीं देखा। जिस देश में बेपरदगी और व्यभिचार का इतना रिवाज हो वहाँ ऐसे आदमी का होना आश्चर्य की बात है। धीरे-धीरे आपकी सत्यता, ईमानदारी तथा नेकी की खबर मक्का नगर की एक प्रसिद्ध धनी स्त्री "बीबी खुदैजा" के कानों तक पहुँची। यह भीबड़े प्रतिष्ठित घराने की लड़की और बहुत धनी स्त्री थी। यह विधवा थीं। इनका दो विवाह इससे पहिले हो चुका था। पहिले पति की मृत्यु के बाद उन्होंने दूसरे आदमी से विवाह किया। पहिले दो पतियों से तोन बच्चे भी हुए परन्तु दूसरे पति का भी जब देहान्त हुआ तो उन्होंने प्रण कर लिया कि अब कदापि दूसरा विवाह न करूंगी। कई साल तक बिधवा बैठी रहीं। नगर के बड़े-बड़े रईस और प्रतिष्ठित लोग उनके पास मंगनी

भेजते पर वह इंकार कर देतीं। यहाँ तक की उनकी अवस्था ४० साल की हो गई

उन्होंने जब हजरत की सत्यता, ईमानदारी तथा व्यापार की रुचि का हाल सुना और यह भी जाना कि उनके पास इतना रुपया नहीं है कि वह कोई बड़ा व्यापार कर सकें तो उन्होंने अपने गुलाम को उनके पास भेज कर यह कहलाया कि आप यदि मेरा माल दूसरे देशों में ले जाकर बेचें तो लाभ का आधा भाग आपको दिया जायगा। आपने इस शर्त को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। जब क़ाफिला जाने लगा तो हज़रत खुदैजा ने अपना बहुत सा माल और अपना एक गुलाम हज़रत के साथ कर दिया। आपकी यह दूसरी यात्रा थी। आपने बड़ी चतुरता से वह माल बहुत अच्छे दामों में बेचा। यदि कहीं से कुछ नए माल के खरीदने की आवश्यकता पड़ी तो बहुत अच्छा माल सस्ते दामों में खरीद कर दूसरे स्थान पर उसको अच्छे दामों में बेचा। हजरत खुदैजा का गुलाम इस यात्रा में लगातार आपके साथ रहा। उसको हर स्थान पर आपकी बातें और रंग-ढंग देखने और सुनने का पूरा अवसर मिला। हर आदमी से आपकी नर्म और मृदुल वाणी, माल की देखभाल में तत्परता, लेन-देन में सहायता ईमानदारी, मेहनत से न घबराना, अथवा माल की पहिचान आदि को उसने ध्यान पूर्वक देखा। कुछ दिनों पीछे क़ाफिला लौटा। आप भी उसके साथ अधिक लाभ उठाकर

लौटे और बड़ी ईमानदारी से उनके माल के पाई-पाई का हिसाब और कुल लाभ उनके सामने रख दिया। उन्होंने लाभ का आधा भाग आपकी सेवा में रख दिया जिसको आपने ले लिया।

हज़रत खुदैजा के गुलाम ने हजरत की बातों और जो कुछ गुण अपनी आँखों से देखा था उसकी बड़ी प्रशंसा की। यह बातें सुनकर हज़रत खुदैजा के दिल में उनका प्रेम हो गया और चाहा कि उनसे अपना विवाह कर लें। यह सोचकर अपनी लौंडी को हज़रत के पास भेजा और कहलाया कि यदि आपको मुझसे विवाह करना स्वीकार हो तो मैं विवाह करने को तैयार हूं। आपने अपने चचा से इसकी जिक्र की तो उन्होंने कहा।

भतीजे! तुम बड़े भाग्यवान हो कि आज खुदैजा जैसी प्रतिष्ठित और धनी स्त्री ने स्वयं तुमसे विवाह करने की ख्वाहिश की वरना बड़े-बड़े शरीफों और रईसों ने सन्देशा भेजा था। मगर उन्होंने इनकार कर दिया।

दिन नियत हुआ और आपके चाचा, आपको और बिरादरी के बहुत से आदमियों को लेकर हजरत खुदैजा के घर गए और आपका विवाह उनसे हो गया। उस वक्त आपकी आयु २५ साल और हजरत खुदैजा की उम्र ४० साल की थी।

विवाह के पीछे आप चाचा के घर से उठकर हजरत खुदैजा के घर चले आए। हजरत खुदैजा को आपके गुण

देखकर विश्वास था कि आपका भविष्य बहुत ही उज्जल है इसलिए उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक अपने सारे माल का मालिक हजरत ही को बाना दिया और स्वयं आपकी सेवा में लगी रहती थीं।

अब यद्यपि आप बहुत धनी कई व्यापारिक कोठियों के मालिक थे और बहुत से लौंडी गुलामों के स्वामी बन गये थे किन्तु आपकी नेकी सादगी और आचरण में लेश मात्र भी अन्तर नहीं आया। आपको घमंड तनिक भी न हुआ। आपने किसी को धोका नहीं दिया। किसी के साथ अत्याचार नहीं किया। वरन् गरीब दुखियों पर दया करते और उनसे मिलते रहते और मीठी-मीठी बातें करते। कुछ दिन पीछे आपने अपने दयालु चचा के घर की गरीबी देखकर उनके लड़कों में से एक लड़के "हजरत अली" को लेकर अपने साथ हज़रत-खुदैजा के घर में रखा और उनका पालन-पोषण शुरू किया। इसका उद्देश यह था कि चचा की सहायता भी हो जाय और उनके जो एहसानात हैं उनका बदला भी हो जाय। हजरत खुदैजा विवाह से २५ वर्ष बाद तक जीवित रहीं। अर्थात् जब हजरत मुहम्मद साहब की आयु ५० वर्ष की और हजरत खुदैजा की आयु ६५ वर्ष की हुई तो उनका देहान्त हो गया। हजरत मुहम्मद से उनके ६ बच्चे हुए, दो लड़के और ४ लड़कियां। लड़के तो बचपन ही में मर गए। परन्तु चारों लड़कियां बड़ी हुईं और व्याही गईं।

हज़रत ने अपनी सारी जवानी एक बीबी के साथ बिताई। देश में उस समय यद्यपि कई-कई स्त्रियों से विवाह करने की प्रथा थी। इन बीबियों के अतिरिक्त प्रत्येक आदमीके यहां एक-एक दो-दो लौंडियां भी रहती थीं मगर आपके आचरण की खूबी इससे बढ़कर और क्या होगी कि जब तक वह जीवित रहीं आपने न दूसरा विवाह किया और न आपने किसी स्त्री की ओर निगाह उठाकर देखा। हालांकि यदि आप तनिक भी दूसरे विवाह की रुचि करते तो बीबी खुदैजा कदापि आप को न रोकतीं। क्योंकि वह आपके शुद्ध आचरण को देखकर आपका बड़ा आदर करने लगी थीं।

जब आपकी आयु ३५ साल की हुई तो मक्का वालों ने काबा की पुरानी इमारत को गिराकर नए सर से बनाना चाहा। सारी क़ौम में चन्दा हुआ और इमारत बनकर तैयार हुई। जब काबा बनकर तैयार हुआ तो एक बात में आपस में झगड़ा होने लगा। झगड़ा इस बात पर हुआ कि जब काबा की बाहरी दीवार में काला पवित्र पत्थर के लगाने का समय आया तो प्रत्येक खानदान वाले यह चाहते थे कि उस पत्थर को हमारे ही खानदान का आदमी लगाए। यह पत्थर बड़ा प्रतिष्ठित था और प्रत्येक आदमी इसका बड़ा आदर करता था क्योंकि इस पत्थर को हज़रत इब्राहीम ने उस जगह लाया और चूमा था। जब यह झगड़ा बहुत बढ़ा तो हज़रत ने कहा

यदि मेरी राय पर चलो तो झगड़ा अभी समाप्त होता है और किसी खानदान को शिकायत न रहेगी।

सभी ने प्रसन्नतापूर्वक आपको पंच नियुक्त किया और आपके फैसले को मानने का वचन दिया। आपने कहा —

"एक चादर बिछाओ। मैं तुम सब का प्रतिनिधि बनकर इस पवित्र पत्थर को उठाकर उस चादर पर रख दूंगा फिर हर खानदान का एक-एक आदमी उस चादर को पकड़ कर ऊपर उठाए इस प्रकार प्रत्येक खानदान का आदमी उसके उठाने में बराबर का साझीदार होगा और उसके उठाने का अभिमान प्रत्येक खानदान को होगा। उसके बाद फिर चादर से उठाकर काबा की दीवार में जिस जगह उसे लगाना है मैं तुम सबका प्रतिनिधि बनकर लगा दूंगा" आपके इस फैसले के अनुसार काम किया गया और आपकी तीव्र बुद्धि की बदौलत एक बढ़ता हुआ झगड़ा सरलतापूर्वक तय हो गया, और चूंकि आप काबा के पुरोहित के पोते और भतीजे थे इसलिए किसी को इस फैसले का विरोध न हुआ।

अध्याय ४

पैगम्बर का पद

जब आपकी आयु ४० वर्ष की हुई तो आप हर समय गहरे सोच में रहने लगे। संसार के बहुधा पैगम्बरों (बुद्धों) को इसी उम्र में ईश्वर की खोज, देशवासियों की खराबियों के

दूर करने की रुचि, मनुष्य के जीवन का उद्देश जानने की चिन्ता, मृत्यु के बाद की दशा मालूम करने की धुन और आत्मा की मुक्ति प्राप्त होने की लालसा रही है। इसी प्रकार की बातें आपको भी हर समय गहरे सोच-विचार में डाले रखती थीं। आप अब लोगों से कम मिलते-जुलते। कभी कभी आप शहर से बाहर पहाड़ों पर या ग़ारों में घंटों बैठे रहते और ईश्वर के ध्यान में मग्न हो जाते। रात-रात भर जागते। मौन अधिक रहते। कभी-कभी पहाड़ों और ग़ारों में दो-दो तीन-तीन दिन लगातार रह जाते और उसके लिए घर से खाना-पानी साथ ले जाते।

इस तपस्या का फल पहिले तो बहुत थोड़ा मिला अर्थात् आपके आसपास तीव्र चमक और ज्योति दिखलाइ देने लगी। कभी कभी आप कोई स्वप्न देखते और भविष्य में ठीक उसी के अनुसार घटना घटती। चूंकि आपका उद्देश्य इससे बहुत ऊंचा था अतः आपको इन छोटे मोटे चमत्कार से विशेष संतोष न होता। ६ महीने तक आपकी यही दशा रही। अंत में सन् ६१० ई० में उसी महीने और दिन में जिस महीने और दिन में आप पैदा हुए थे "हेरा पहाड़" पर आप बैठे थे कि आपके पास ईश्वर का वह फरिश्ता (दूत) आया जो ईश्वर के यहाँ विद्या और बुद्धि के दफ्तर का सबसे बड़ा नेता (शायद सरस्वती) है और जो आपसे पहिले सारे पैग़म्बरों (बुद्धों) के पास ईश्वर की ओर से आता और ईश्वर का संदेश उनके

पास पहुँचाता रहा था। इस फ़रिश्ते का नाम "जिब्रील"(उन पर ईश्वर का सलाम) था। उन्होंने हज़रत को ईश्वर की ओर से तीन संदेस दिए। १—आप आज से ईश्वर के अंतिम पैगम्बर बनाए जाते हैं आपके ज़िम्मे संसार भर के मनुष्य का सुधार करना है। ईश्वर का संदेश आपके पास आता रहेगा। इसी के अनुसार काम कीजिए। मेरा नाम जिब्रील है मैं बराबर आपके पास आता रहूँगा। २—मैं आपको ईश्वर की पूजा का विशेष ढंग बताने आया हूँ। जैसे जैसे मैं करूं मुझे देख देख कर उसी प्रकार आप भी करते जाइए। पूजा और गुलामी केवल ईश्वर की चाहिए यह कहकर हज़रत जिब्रील ने पहिले हाथ मुँह बांह और पैर धोए उनको देखकर हज़रत ने भी धोए [यही "वज़ू" है जिसे आज तक सारे मुसलमान करते हैं] इसके पश्चात् जिब्रील ने वहीं काबा की तरफ मुँह करके खड़े होकर फिर झुक कर फिर पृथ्वी पर सर रख कर ईश्वर की पूजा की और हज़रत भी उनके साथ वैसे ही काम करते गए [यही क्रिया नमाज़ कहलाती है। नमस और नमाज़ का अर्थ आदर है अर्थात् खुदा का आदर इस प्रकार किया करो] ३—इसके पश्चात् हज़रत जिबरील ने जो कुछ कहा उसका यह अर्थ था। "आपका देश अनपढ़ है और बुराइयों में फंसा है आप स्वयं अनपढ़ हैं। ख़ैर खुदा का नाम लेकर पढ़ना आरम्भ कर दीजिये आपका पालनहारा दयालु है वह अब भी आपको

बिना गुरू सिखा-पढ़ा देगा वही किताब तथा क़लम के के द्वारा भी विद्या देता है और वही अपनी दया से बिना विद्यालय तथा पुस्तक के और बिना क़लम, दवात, कागज के भी मौखिक विद्या सिखा देगा। हर प्रकार विद्या से स्वयं भी लाभ उठाइये तथा दूसरों को भी विद्या प्रचार कीजिये। आप सारे संसार के नेता (सरदार) होने वाले हैं।"

यह कह कर वह दूत दृष्टि से ओझल होगया। जब आप एकांत में रह गये तो बार-बार आपको दूत (फ़रिश्ता) की बातें ध्यान में आने लगीं "सारे संसार के नेता होने वाले हो—देश में विद्या का प्रचार करो—खुदा बिना विद्यालय के, बिना गुरू के, बिना पुस्तक तथा क़लम के तुमको सिखा देगा। तुम सीखो और सब को सिखाओ—"

आप सोचने लगे:—

"यह उत्तरदातित्व सरल नहीं है। यह कार्य भी सरल नहीं। कांटों की सेज पर लेटना सरल है। परन्तु पापों से भरे हुये देश को पापों से उद्धार करना, मूर्ति-पूजा से रोकना, शराब तथा जुआ से रोकना, लूट-मार तथा ज़िना से रोकना, आसान नहीं। यह तो भिड़ों को छेड़ना, सांप के मुख में हाथ डालना तथा बाघ के सम्मुख फांद पड़ना है। क्या मैं इस कार्य की पूर्ति कर पाऊंगा?—परन्तु अब न कर सकने का क्या प्रश्न—जिब्रील ने कहा यह पद तुमको मिल चुका है।

यह कार्य हर प्रकार पूर्ण करना ही होगा—क्या यह अरब के अनपढ़ वहशी जुबे के प्रेमी, शराब के लोभी, मूर्तिपूजा के प्रेमी मेरी आज्ञा पालन करेंगे ?—मैं इन वस्तुओं की बुराई करूँगा तो क्या वे ठंडे पेटों मेरे कथन को स्वीकार कर लेंगे।—सन्देहवश नहीं—बल्कि वे मेरे शत्रु बन जायेंगे। मुझे मार डालने की चेष्टा करेंगे—यह कार्य जान जोखिम का है।"

आप यह विचार करते हुये घर पहुँचे। और हजरत खुदैजा से कहा कि मेरे ऊपर चादर डाल दो। यह कहकर चुपचाप लेट रहे। धर्मपत्नी ने दशा पूछी तो उनसे सारी दशा कही। पत्नी ने घटना सुनकर कहा कि जब आप दान, पुन्न करते हैं, भूखों को भोजन कराते हैं, दुखियारों की सहायता करते हैं, पापों से बचते हैं तो फिर आप भय न करें खुदा आपकी कोई हानि न होने देगा। इससे आपको सहास हुआ और आपने इस काम को पक्के इरादे और दूरदर्शिता से करने की ठान ली। पहिले मित्रों ही पर प्रगट करने का विचार किया। और खुदैजा से कहा मैं अब नबी हूँ मुझे नबी स्वीकार करो और कहो कि—"खुदा को छोड़कर किसी की पूजा और गुलामी न करेंगे और मुहम्मद को खुदा का पैगम्बर (messenger of God) जानेंगे"। उन्होंने तुरन्त ये दो बोल कहे और विश्वास दिलाया कि मैं हृदय से आपको नबी ही समझूँगी।

पत्नी से कहने के पश्चात आपने अपने मित्र अबू बक्र से कहा। क्योंकि आपकी चेष्टा थी कि पहले कुछ साथी बन जायें तब दूसरों तक ईश्वरी संदेश पहुँचायें। बस पत्नी के पश्चात सबसे विशेष विश्वास आपको हज़रत अबू बक्र पर था। इसके अतिरिक्त हज़रत अबू बक्र मक्का के एक महान पुरुष स्वीकार किये जाते थे। तथा धनवान व्यापारी थे। हज़रत अबूबक्र ने भी बिना हिचकिचाहट आपको सत्य नबी स्वीकार कर लिया। और वही दो बोल आपके सम्मुख कह भी दिये कि "ख़ुदा के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं तथा मुहम्मद अल्लाह का संदेश लाने वाले हैं।"

उनके संग हो जाने से हज़रत को बड़ा प्रोत्साहन मिला। इसके पश्चात आपने हज़रत अली से कहा जो आपकी देख-भाल में पल रहे थे। उनकी आयु इस समय दस वर्ष की थी। उन्होंने कहा मैं अपने पिता से राय कर लूँ। दूसरे दिन वह भी यह दो बात कहकर तथा हृदय से स्वीकार करके मुसलमान हो गये। फिर आपने अपने दास हारिसा के पुत्र ज़ैद को ईश्वर का संदेश सुनाया वह भी दो बोल कहकर इस्लाम में आगये और आपको नबी मानकर आपका कथन सत्य मानना स्वीकार किया।

अध्याय ५

इसलाम के नियम

यहाँ पर यह बता देना आवश्यक है कि हज़रत के निकट जब कोई मुसलमान होने आता तो आप क्या शिक्षा उसको देते थे। और उसके उस समय के जीवन, विश्वास तथा कार्यों में क्या अंतर प्रकट करना चाहते थे? अर्थात वे कौन सी बातें थीं जो दूसरे मनुष्यों में नहीं थीं और आप जनता में उत्पन्न करके एक नया राष्ट्र तथा नई संस्था बनाना चाहते थे? आप कहते:—

सुनो:—मुसलमान होने का अर्थ यह है कि अब से तुमको अपने प्रत्येक कामों में मेरा अनुकरण करना होगा।

मुझको ध्यानपूर्वक देखो और मेरी रीतियों का पालन करो। मैं ख़ुदा का नबी हूँ। ख़ुदा ने मुझे आदर्श बना कर भेजा है। ख़ुदा तुम लोगों को मेरी ही मार्ग पर चलते देखना चाहता है। आज से तुम स्त्री बालक, घर तथा माल को ख़ुदा की वस्तु समझो और अपने को उसका ख़ज़ांची जानो। तुम उनमें मनमानी काम नहीं कर सकते बल्कि जो ख़ुदा की आज्ञा हो उसका पालन करो। चाहे उसमें तुमको अपनी हानि ही प्रतीत हो। मेरे कथन को मानोगे तथा उस पर सच्चे हृदय से चलोगे और उसकी रुकावटें तथा कठिनाइयों को झेलोगे तो ख़ुदा तुमको स्वर्ग देगा और तुम्हारी सहायता करेगा। जिस

प्रकार मुझसे पहले के नबियों के मानने वालों की खुदा ने सहायता की थी। परन्तु यदि मेरे विरुद्ध करोगे तो खुदा तुमको नर्क में डालेगा तथा तुमको भी संसार से मिटा देगा जिस प्रकार आद, समूद, मदयन आदि जातियों को मिटा चुका है। अब मैं तुमको बताता हूँ कि खुदा तुमको मेरे द्वारा कुछ आज्ञा देता है और वह यह हैं कि (अ) कुछ बातें हृदय में ऐसी जमालो कि किसी के बहकाने से उनसे न हटो (ब) कुछ बातें इस प्रकार पाबन्दी से किया करो कि किसी लालच, किसी व्यापार किसी दशा में उनको न छोड़ो। उसके साथ खुदा तुम को मेरे द्वारा कुछ बातों से कड़ाई से रोकता भी है। बस उसके अनुसार पालन करना। यह है इस्लाम। अब वे बातें सुनो :—

(अ) विश्वास जो तुम हृदय में जमाओ यह हैं। :—

१—अल्लाह (खुदा) को सारे संसार का मालिक तथा जन्म देने वाला मानो। उसके शरीर नहीं है। वह हर स्थान पर है, सब कुछ जानता है सब कुछ कर सकता है। डरना तथा सहायता मांगना केवल उसीसे चाहिये।

[नोटः—आपके इस गुर से मनुष्य वीर बनता है नहीं तो कायर रहता है]

२—अल्लाह ने एक प्रकार की सृष्टि अनगिनती उत्पन्न की है वह फरिश्ता (दूत है)। वह दिखाई न दें न सही परन्तु उनका उपस्थित होना मानो और यह भी मानो कि वह अल्लाह के आज्ञाकारी दास है न वह नर हैं न नारी खुदा ने दुनियाँ के

प्रबन्ध के काम जैसे हवा चलाना, पानी बरसाना गल्ला, फल, फूल उगाना; सोना चाँदी और धातुयें ज़मीन के अन्दर बनाते रहना, प्रकाश और विद्या फैलाना, जान डालना तथा जान निकालना उनको सौंप तो दिया है परन्तु उनको इन बातों का स्वतंत्र मालिक नहीं बना दिया बल्कि वह हर काम को खुदा की नई आज्ञानुसार करते हैं।

[नोटः--आपकी इस शिक्षा से मनुष्य को खुदा की बड़ाई और बादशाही प्रकट होती है।]

३—खुदा ने मनुष्य के भटकने पर कुछ भले जन बुद्धिमान और 'अपने शिष्य जन हर समय में हर देश में उत्पन्न किये जो लोगों को सीधे मार्ग पर चलायें। वे सब नबी (अनदेखी बात बताने वाले) रसूल (खुदा का संदेश लाने वाले) और बुद्धिमान (समझ और ज्ञान वाले) थे।

वह सब सच्चे थे। वह सभी देशों तथा जातियों में आये। और अपने देश व जाति की भाषा ही बोलते थे। वह एक लाख चौबीस हज़ार थे। वह सब मेरे पूर्व आ चुके। मैं अंतिम नबी (बुद्ध) हूँ जिसके आने का समाचार सभी नबियों ने अपने समय में दिया है। मैं वही अंतिम नबी (बुद्ध) हूँ। अब कोई नबी न आयेगा। सब को हृदय से सच्चा जानों, सब का आदर, करो।

[नोटः—आपकी इस शिक्षा से मनुष्य में सारे मनुष्यों का प्रेम, दया और रवादारी पैदा होती है]

४—खुदा ने अपने सच्चे नबियों के द्वारा हर समय और हर देश में वहाँ की भाषा में अपनी शिक्षायें भेजी थीं उनको भी सच्चा जानो। वे शिक्षायें तथा किताबें आज असली नहीं रह गई हैं परन्तु तुम अक्षरशः उनको सच्चा समझो क्योंकि वे भी वही बातें थीं जो आज मैं तुमको बता रहा हूँ जो उन असली किताबों को न स्वीकार करेगा मानो मेरी शिक्षा और खुदा की पुस्तक (कुरआन) को भी नहीं मानता।

[नोटः—आपके इस गुर से मनुष्य हर देश और हर भाषा की बुद्धि की बातों को तथा खुदाई फलासफी को मान सकता और अपना सकता है।]

(ईश्वीरय सिद्धांत)

५—यह मानो कि यह संसार एक दिन नष्ट हो जायेगा और यह भी मानो कि उस अंतिम दिन के बाद ही खुदा का एक बड़ा दरबार होगा जिसमें तमाम अगले-पिछले मनुष्य मर चुकने के पश्चात् फिर दूसरे संसार में जीवित होंगे और हर मनुष्य का हिसाब होगा। हर कार्य का बदला मिलेगा जिसके पुण्य ज्यादा होंगे उसे स्वर्ग मिलेगा जिसमें आराम का जीवन होगा और जिसके पाप विशेष होंगे उसे नरक मिलेगा जिसमें सदा के लिये दुख का जीवन होगा।

[नोटः—आपके इस गुर से मनुष्य के हृदय में खुदा का भय, दण्ड मिलने का भय रहता है इस कारण से मनुष्य अपराध और बेइनसाफ़ी करने का साहस नहीं कर सकेगा]

६—यह मानो कि संसार और मनुष्यों के बनाने के पूर्व से ही खुदा इन सारी बातों, कार्यों और परिस्थितियों को जानता था जो संसार में अंतिम दिन तक होने वाली हैं और खुदा ने उन बातों को एक तख़्ती पर पहले ही से लिख भी दिया है। किसी-किसी कार्य को बिल्कुल अंतिम तथा अटल फैसले के सहित और किसी-किसी कार्य की दशायें बदलने के नियमों के सहित लिखा है। परन्तु यह लिखना केवल इस कारण से है कि तुमको जीवन की दौड़ में अगर कोई प्रसन्नता या सफलता प्राप्त हो तब विश्वास रक्खो कि खुदा ने ऐसा ही होना चाहा तथा लिखा था इस लिये हमको इतराना न चाहिये यह तो खुदा की ओर से हुआ इसी प्रकार अगर तुमको जीवन में कभी दुख और असफलता का सामना हो तब यों विश्वास करो। इसका इसी प्रकार होना ख़ुदा को स्वीकार था और उसने ऐसा ही लिख रक्खा था इसलिये मुझे हिम्मत न हारना चाहिये यह भी ख़ुदा की ओर से हुआ।

७—यह मानो कि मनुष्य ख़ुदा का वाइसराय (प्रधान मंत्री) है संसार की हर वस्तु उसकी सेवा करने को है। उसका स्थान पत्थर, नदी, सूर्य सबसे ऊँचा है।

(ब) अब वे बातें सुनो जो तुमको लग कर करते रहना है।

१—दिन भर में पाँच समय सुथरे वस्त्र तथा शरीर के साथ सब लोग मिल कर एक साथ ख़ुदा की नमाज़ पढ़ना, ख़ुदा की बड़ाई दिल से मानना, जीभ से प्रशंसा करना

और शरीर से दिखाना। यह शिक्षा पहले के राष्ट्रों को भी ख़ुदा ने दी थी परन्तु उन्होंने उसको छोड़ दिया, तुम न छोड़ना।

नोटः—आप के इस गुर से मनुष्य में पवित्रता का विचार, गरीब, धनी, भले, बुरे की बराबरी का विश्वास, मेल-मिलाप तथा दया की भावना, अफ़सर का चुनाव, अफ़सर की आधीनता आदि की रीतियाँ ज्ञात होती हैं।]

२—साल भर में धनवान लोग ईश्वरी टेक्स २½ प्रतिशत निकाल कर मुसलमान गरीबों को दें। इसके अतिरिक्त जो दान और देना चाहें दें। जो जितना देगा ख़ुदा उसे प्रतिष्ठावान रक्खेगा परन्तु सुन लो यदि तुम इसका देना बन्द करोगे तो दुर्गति होगी और नष्ट भी होगे यह शिक्षा भी आगे वाली जंगली जातियों को मिली थी।

[नोटः—आपकी इस शिक्षा से मनुष्य के हृदय में न माल का प्रेम आने पायेगा और न तो माल के बुरे अभाव से अपराध, कायरता और घमंड आयेगा और राष्ट्र प्रसन्न होगा।

३—वर्ष भर में एक पूरे मास का रोज़ा (व्रत) रखना। यह इसलिये कि जिस प्रकार ख़ुदा की आज्ञा से अब हम खाना-पीना तक छोड़े हुये हैं उसी प्रकार हम ख़ुदा की आज्ञा का पालन करते और बुरे कार्य लगातार छोड़ते रहेंगे उसकी शिक्षा पहले के लोगों को भी मिली था परन्तु उन्हों ने पालन न किया।

[नोटः—आप के इस गुर से मनुष्य में पेट भरे पन की दुष्टता तथा रोग न उत्पन्न होंगे। उपकार उसके मन में आयेंगे। भूखों पर दया करना आयेगा।]

४—यों तो जब चाहो उस काबा का आदर करने को उसके चारों ओर चक्कर लगाओ परन्तु साल में एक बार स्थापित दिनों में सब मिलकर दो चादरें पहने और सर खोल कर उसके चारों ओर चक्कर लगाओ। यह शिक्षा हज़रत इब्राहीम से लेकर बराबर है, यहूदी, ईसाई, सब को परन्तु सब ने छोड़ दिया तुम न छोड़ना।

[नोटः—आपके इस गुर से सारे मुसलमान हर वर्ष इकट्ठा होकर एक दूसरे की दशा ज्ञात कर सकेंगे और सहायता दे सकेंगे।

५—अपने इस धर्म को जो वास्तव में पुरानी जातियों का भी असली धर्म है सुरक्षित तथा बाकी रखने के लिये हर समय हर प्रकार की पूरी चेष्टा करते रहना। उसके ऊपर आप लग जाओ और अपने घर वालों को उसका प्रचार शिक्षा द्वारा बराबर करते रहो। विरोधियों का उत्तर दो। देखो इसको न छोड़ना नहीं तो खुदा तुम्हारी दुर्गति करेगा। मैं जो शिक्षा लाया हूँ इसीको हर देश के पैगम्बर (अवतार, बुद्ध) बराबर लाते रहे परन्तु संसार वाले इसको भूल बैठे अब मैं फिर वही शिक्षा सारे संसार में फैलाने आया हूँ।

इसलिये जहाँ में न पहुँच सकूँ तुम पहुँचाओ ताकि सारे

संसार को उसका असली धर्म मिल जाय यह एक महत्तपूर्ण दया है।

(ज) अब कुछ वे बातें सुनो जिनको तुम्हें छोड़ना पड़ेगा।

जुवा खेलना, दारू पीना, बुत पूजना, ब्याज लेना और देना पर-स्त्री भोग, झूट बोलना और झूटी गवाही देना, किसी वस्तु में खोटीपन तथा मिलावट मिलाना, पराई स्त्री पर बुरी दृष्टि डालना, वचन तोड़ना, जीव-हत्या करना, माल लूटना, अपराध लगाना, पीठ पीछे बुराई करना, अपने ऊपर इतराना, जादू करना, गाली देना, स्त्री का भेस बनाना, लड़कियों को मार डालना या जीवित गाड़ देना, कम तौलना, हराम का खाना,

आप पहले छुपे, लोगों को यह सन्देश पहुँचाते। हज़रत अबूबक्र भी आपके साथ बड़े लगत से ख़ुदा का यह सन्देश पहुँचाते। एक बार हज़रत अबूबक्र ने कहा कि जब हमारा धर्म सच्चा है तो हम क्यों न खुले ख़ज़ाने काबा में चलकर ख़ुदा की पूजा भी करें और दूसरों में प्रचार भी करें। आप तैयार हो गये। पहले आपने मक्का वालों को मूर्ति-पूजा छोड़-कर अकेले ख़ुदा की पूजा करने और शराब-जुवा आदि छोड़ने को कहा तो वे लोग बिगड़ने लगे तो अबूबक्र ने आपको बैठा कर आप ही प्रचार करना आरम्भ कर दिया। इस पर वे लोग इतना बिगड़े कि दोनों सज्जनों को बहुत दुख दिया, बहुत मारा। वे दोनों बेहवास हो गये परन्तु इसके अतिरिक्त इस्लाम फैलता गया। एक हज़रत अबूबक्र की चेष्टा से मक्का के पाँच

बड़े वीर बुद्धिमान तथा धनी मुसलमान हो गये। उनके नाम ये हैं – उसमान, तलहा, ज़ुबैर, अबदुर्रहमान, अबू उबैद। इनके अतिरिक्त कुछ दुरबल तथा बेबस दास तथा दासियां भी आपकी शिक्षा स्वीकार करके आपके जत्थे में मिल गईं। क्योंकि उन्होंने इस छोटे जत्थे के हर मनुष्य को हर समय खुदा के ध्यान इन्साफ़ तथा सत्य पे बिना लाग लगा देखा तो उनको अपने मालिकों की रीतियाँ और धर्म के सम्मुख यह धर्म बहुत पसन्द आया। यह देखकर बुत पूजनेवाले रईस जो उन लौंडी तथा दासों के मालिक थे बहुत बिगड़े और अपने मुसलमान लौंडी दासों-दासियों पर बड़ा अत्याचार करने लगे। भाँति-भाँति का दुख देने लगे और सताने लगे जिसमें दो एक की जान भी चली गई। परन्तु कोई इस धर्म से नहीं फिरा। अंत में हज़रत अबूबक्र से उन दुर्बलों का दुख देखा न गया तो उन्होंने इस प्रकार के सात दास दासियों को अपने धन से मोल ले लिया और ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिये उनको स्वतंत्र कर दिया। ऐसी दया से तथा ऐसी चेष्टासे आप हज़रत अबूबक्र से बड़े प्रसन्न होते और आपकी प्रसन्नता सिफ़ारिश से ख़ुदा विशेष प्रसन्न होता। यही कारण है कि भगवान (ख़ुदा) ने कुरआन में हज़रत अबूबक्र की प्रशंसा इतनी विशेष की कि किसी और की उतनी प्रशंसा नहीं की। हज़रत मुहम्मद ने भी कहा है कि जितना अबू बक्र के माल ने मुझे सुखी और प्रसन्न किया उतना किसी और के माल ने नहीं किया।

इस प्रकार आप लगातार दो वर्ष तक धर्म का प्रचार करते रहे। दुख सहे, साथियों का दुख देखा परन्तु खुदा को नहीं भूले। सबको साथ लेकर खुदा की पूजा-पाठ करते रहे और उसी से अपना दुख-दर्द कहते तथा सहायता माँगते रहे। हर कार्य को सत्यतापूर्वक किया। अत्याचार तथा पापों से बचते रहे और शत्रुओं के संग भी प्रेम तथा नम्रता का बरताव करते रहे। भगवान (खुदा) से उन्होंने यही सीखा और शिक्षा पाई थी कि "शत्रु एक गाल पर तमाचा मारे तो तुम कठोरता न दिखाओ दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।"

ऐसा ही उपकार करने पर खुदा ने प्रसन्न होकर आपको शत्रुओं से एक प्रकार जीत दिलाई कि शत्रु के बड़े-बड़े प्रभावशाली, प्रतिष्ठित, बड़े-बड़े वीर बुद्धिमान और धनी लोग एक एक करके दुश्मनों से टूट कर हृदय से आपकी ओर हो गये।

आपने इस समय शत्रुओं पर तलवार नहीं उठाई थी, आपने किसी को धन का, पद का, स्त्री का अथवा किसी अन्य वस्तु का लोभ नहीं दिया था। फिर केवल तब नियमों की सुन्दरता, करेक्टर की मजबूती, बेलाग सत्यता और बिना संकोच खुदा की पूजा को छोड़ कर और कौन सा हथियार या शक्ति थी जिससे खुदैजा और अबू बक्र जैसे प्रसिद्ध तथा महापुरुष, खुदैजा तथा उसमान जैसे इज्जत और धनवाले, उमर और हमजा जैसे वीर तथा राजनीतिज्ञ, अबू उबैद और तलहा जैसे जान निछावर करने वाले, बलाल और सुहेब जैसे

परिश्रमी आपके संग हुये और मालिकों के अत्याचार भोगने पर भी उसी पर डटे रहे। जीत दो प्रकार की होती है। एक हृदय की जीत और शत्रुओं की कमी। यह तो खुदा ने आपको उसी समय से देनी आरम्भ कर दी थी परन्तु दूसरे प्रकार की जीत वह है कि शत्रु लड़ने में हार मानकर मैदान से भाग जाय उसको खुदा ने आपको तेरह वर्ष पश्चात दी।

मक्का वालों ने जब देखा कि हज़रत मुहम्मद का मंडल दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है तो उन्होंने विशेष अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। उन अत्याचारियों ने आप पर पत्थर फेंके। अबू जेहल जो नाते में आपका चचा होता था एक दिन पहले तो आपको गालियां दीं आप चुप रहे फिर उसने इस शक्ति से आपके सर पर पत्थर मारा कि आपके माथे से खून का फव्वारा चलने लगा। आप चुपचाप घर लौट आये। आप के सगे चचा हमज़ा ने जो आपके जोड़ीदार भी थे और उस समय तक मुसलमान नहीं हुये थे। जब आकर यह दशा देखी तो उलटे पांव बाहर गये और अबू-जेहल को ढूँढ़ कर इस प्रकार कमान उसके सर पर मारी कि उसका सर फट गया और घर आकर भतीजे से कहा प्रसन्न हो जाओ मैंने भी अबू जेहल का सर फोड़ दिया आपने कहा "चचा! मुझे इससे कुछ प्रसन्नता नहीं हुई। मेरी प्रसन्नता तो इसमें है कि आप अपने जन्म देने वाले, भोजन देने वाले को मानिये और उसी की सेवा में लग जाइये और मुझको खुदा का रसूल (भगवान का

संदेश लाने वाला) जानिये" हजरत हमजा तुरन्त मुसलमान हो गये।

इसके अतिरिक्त मक्का वालों ने आप पर कूड़ा तथा गंदगियाँ फेंकीं। आप नमाज पढ़ रहे थे सर भगवान के संमुख पृथ्वी पर रक्खा था कि एक शत्रु ने ऊँट की आँतें तथा ओझड़ी कई मनुष्यों से उठवाकर लाकर आपकी पीठ पर रख दीं जिसके बोझ से आप दबे जा रहे थे और आपको तकलीफ थी। आप को झूठा, जादूगर, कवि तथा पागल कहना आरम्भ किया आपके दुर्बल साथियों को गर्म रेती पर लेटाते उनको गर्म लोहे से दागते।

जब मक्का वालों के अत्याचार का अंत न रहा तो आपने अशक्ति मुसलमानों से कहा कि तुम हब्श चले जाओ, जन्मभूमि छोड़ दो। वहाँ एक ईसाई बादशाह शासक है मुझे अल्लाह से आशा है कि वहाँ तुम को चैन मिलेगा।

पाचवें वर्ष ग्यारह मर्द और चार स्त्रियाँ हब्श चली गईं। जिनमें आपकी बेटी तथा दामाद हजरत उसमान भी थे। वहाँ उनको आराम मिला। परन्तु शत्रुओं ने कुछ दिनों के पश्चात झूठी खबर यह उड़ा दी कि अब मक्का वालों से और हजरत से सुलह होगई और मक्का में अमन चैन है। यह सुनकर शरणार्थी धोखे में हब्शा से लौट कर मक्का आगये तो मालूम हुआ कि सूचना झूठी थी।

कुछ समय रहने के पश्चात दुर्बलों ने दूसरी बार हब्श गये उसमें अस्सी आदमी थे। यह देखकर मक्का वालों ने हब्श के बादशाह को कुछ सौगात भेज कर प्रार्थना की कि मक्का के कुछ अन्यायी लोग जो आपके देश में जाकर ठहरे हैं उनको निकाल दीजिये और हमको सौंप दीजिये। बादशाह ने मक्का के राजदूतों और मुसलमानों को दरबार में बुलाकर सब हाल एक दूसरे के सम्मुख पूछा और ज्ञात हुआ कि हज़रत मुहम्मद की शिक्षा यह है कि लड़कियों को जीवित गाड़ना बन्द करो, मूर्ती-पूजा न करो। निर्लज्जता की बातें छोड़ दो, शराब-जुवा छोड़ो, ख़ुदा को तथा ख़ुदा के नबियों को जिनमें हज़रत ईसा भी हैं उसको और मुझको मानो तो वह स्वयं मुसलमान हो गया और उसने मुसलमानों से कहा कि आप आराम पूर्वक रहिये आपको कोई डर नहीं।

जब मक्का वालों ने यह देखा अबूतालिब से कहा कि अपने भतीजे को या तो हमारे देवताओं के बुरा कहने से रोको यदि यह नहीं रुकते तो उनसे पूछो वह क्या चाहते हैं अगर माल की इच्छा हो तो हम इतना माल उनको दें कि वह प्रसन्न हो जायं। यदि राज की इच्छा हो तो हम उनको अपना बादशाह मान लेते हैं। अगर उनकी स्त्रियों की इच्छा हो तो हम अरब भर की सबसे सुन्दर स्त्रियां उनके निकट जमा कर दें। धर्म तथा देवताओं की बुराई छोड़ दें। हज़रत ने यह सुना तो कहा यदि यह लोग मेरे

एक हाथ में चन्द्रमा व दूसरे हाथ में सूर्य रख दें तो भी अपना कार्य बन्द न करूंगा । मैं नबी हूँ नेकी फैलाने आया हूँ। माल या स्त्री का लोभी नहीं हूँ। यह सुनकर वे लोग आपके मार डालने की सलाह करने लगे तो उनमें से एक ने कहा कि उनको किस प्रकार कत्ल कर सकते हो उनके चचा अबूतालिब काबा के प्रोहित और हम सब के सरदार हैं और हज़रत के सहायक हैं यदि उनको मार डालोगे तो उनके पूरे कुटुम्ब बनी हाशिम से लड़ना होगा। अंत में राय यह हुई कि (हज़रत) मुहम्मद ने हमारे देवताओं को बुरा कहा इस कारण उनसे तथा उनके कुटुम्ब से पूर्णरूप से बाईकाट किया जाय। न उनसे कोई बोले न उनके हाथ कोई वस्तु बेचे। न उनसे शादी विवाह करे"। यह तय पाया और प्रतिज्ञा लिखी गई और काबा में लटकाया गया कि सब लोग देख लें। अबूतालिब ने अपना पूरा कुटुम्ब मक्का से ले जाकर एक घाटी में बसाया। यह समय बड़े दुःख से बीता। बहुधा पूरे कुटुम्ब को उपवास करना पड़ा। हर वस्तु का कल्याण था। अंत में तीन वर्ष बीतने पर अपने चचा से कहा कि मुझे मेरे खुदा ने खबर दी है कि काबा में जो प्रतिज्ञा लटकाई है उसके प्रत्येक अक्षरों को दीमकों ने चाट डाली है केवल अल्लाह का शब्द रह गया। आप मक्का जाकर मक्का वालों से कहिये कि प्रतिज्ञा का खुदा ही ने नष्ट कर दिया अब किस बात की पाबन्दी रह गई।"

अबूतालिब ने मक्का वालों से जाकर कहा उन्होंने कहा हम चलकर कागज़ उतारते और मुहम्मद के कथन का सत्य तथा झूठ ज्ञात करते हैं। देखा तो कथन सत्य था उस समय कुछ मक्का वालों का हृदय भी पसीजा और बाईकाट तोड़ा। अब आबूतालिब का पूरा कुटुम्ब फिर मक्का में आकर बसा उसके आठ-नौ महीना पश्चात अबूतालिब का देहान्त होगया। आपको इसका बड़ा दुख हुआ। तीनही दिन बीते थे कि आपकी सहायक स्त्री हज़रत खुदैजा का भी देहान्त हो गया। ख़ुदा को यह स्वीकार था कि मेरा नवी केवल मेरे सहारे रहे।

अब ख़ुदा ने आज्ञा दी कि आप धर्म-प्रचार बाहर निकल कर कीजिये थोड़ी बहुत आपत्ति सहिये जो आवश्यक है। इसके अतरिक्त मैं आप का सहायक हूँ आप मक्का और तायफ़ के धनियों के पास गये उनको ख़ुदा का संदेश दिया। उन्हों आपको बहुत सताया आप पर पत्थर फेंके। आपको घायल कर दिया। उधर मक्का और उसके निकट की बसतियों के लोग तो आपको तथा आपके साथियों को इस प्रकार सता रहे थे उधर मक्का से ३०० मील उत्तर मदीना के लोग जो साल के साल मक्का में हज करने आते यहां के दशायें सुनते रहते थे। उनमें कुछ लोगों ने ईसाइयों तथा यहूदियों के ग्रन्थों का अध्ययन किया था। वह जानते थे कि मक्का में एक नबी होने वाले हैं। उन्होंने जब हज़रत की संबन्धी बातें सुनी तो उधर झुकना चाहा परन्तु मक्का वालों की शत्रुता से कुछ दिनों

रुकते रहे अंत में ग्यारहवें वर्ष जब वह हज को आये तो उनमें से केवल ६ आदमी छिपकर रात में हज़रत से मिले और उनकी बातें सुनकर तुरन्त मुसलमान हो गये। इसी समय मक्का के एक प्रसिद्ध पहलवान दुकाना ने कहा यदि आप कुश्ती में मुझसे जीत जायें तो मैं मुसलमान हो जाऊँ। आपने उसको तीन बार पछाड़ा वह मुसलमान हो गया।

बारहवें साल मदीना के सात आदमी और मुसलमान हुये और उन्होंने मदीना में यह धर्म फैलाने का वचन दिया तो आपने हज़रत मुसाअब को उनकी निगरानी तथा शिक्षा के लिये उनके साथ कर दिया। उसी वर्ष खुदा ने आप को मेराज दी (आकाश पर भगवान से मिलने और देखने गये) और हर प्रकार की उन्नति तथा विकास का काल आना आरम्भ हुआ। तेरहवें वर्ष मदीना के सत्तर आदमी आकर मुसलमान हुये। मदीना में पहले ही से चर्चा होने लगी थी तो उन ७० आदमियों ने आपसे प्रार्थना की कि "आप मक्का छोड़ दें और मदीना चलें। हम आपकी हर प्रकार सहायता करेंगे। आपके विरोधियों से लड़ेंगे"।

आपने उनकी प्रार्थना स्वीकार तो करली परन्तु कहा कि "जब ईश्वर की आज्ञा होगी तब चलना होगा"।

अध्याय ६

देश छोड़ना

उसके पश्चात आपने मक्का के मुसलमानों को आज्ञा दी कि एक-एक करके धीरे-धीरे मदीना की ओर चल खड़े हों। और मक्का छोड़ दें। लोगों ने जाना आरम्भ कर दिया। हज़रत उमर फ़ारूक़ ने घोषित करके हिजरत (एक देश छोड़ कर दूसरे देश जाना) की उन्होंने कहा कि 'जिसमें शक्ति हो वह मुझको रोके"। कोई न रोक सका। अब मक्का में केवल तीन मुसलमान रह गये हज़रत तथा उनके मित्र आबू बक्र और हज़रत अली [ख़ुदा का दरूद और प्रणाम उनपर] तुम यह सुन कर अचम्भा करोगे कि आपके विरोधी एक ओर तो आपसे इतना विरोध रखते थे और दूसरी ओर चूंकि आपकी धार्मिकता तथा सत्यता का हाल सब जानते तथा मानते थे इसलिये बहुत से लोग अपना-अपना माल और गहना रक्षा तथा रखने के लिये आप ही के पास रखते भी थे।

इस प्रकार एक दिन मक्का वालों ने तय किया कि फलां दिन हर परिवार का एक-एक आदमी इकट्ठा हो और सब मिलकर हज़रत का घर घेर लें और उनको क़तल कर दें। ख़ुदा ने विरोधियों के इस विचार की सूचना आपको कर दी। आपने हज़रत अबूबक्र से कहा यात्रा की तैयारी करो जिस समय मैं कहूँ उसी समय तुरन्त चल पड़ना। मुझे जाने

की आज्ञा मिल गई है। और तुम मेरे सगं चलोगे"।

वह निश्चित दिन आया दुश्मन (शत्रु) सायंकाल से ही एक-एक दो-दो करके आपका घर घेरने आने लगे। आपने हज़रत अली को बुलाया उनको कुछ थैलियां दी और कहा कि मक्का वालों की अमानत मेरे पास है। मुझे हिज़रत की आज्ञा मिल चुकी है। मैं आज रात को जा रहा हूँ। शत्रु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम मेरे बिस्तर पर सो रहो जिससे शत्रुओं को यही पता चले की बिस्तर पर मैं सो रहा हूँ। सबेरा होने तक मैं दूर निकल जाऊंगा। उस समय यह तुमको सोता पाकर असफल लौट जायेंगे। तुम धीरज धरो तुम्हारा बाल भी बांका न होगा। दो चार दिन में लोगों की अमानतें लौटा कर तुम भी मदीना चले आना।

आधी रात के निकट खुदा का रसूल तेरह वर्ष तक लगातार विरोधियों का अत्याचार धैर्य्यपूर्वक सहते रहने के पश्चात मक्का छोड़ने के लिये घर से निकला। द्वार पर विरोधियों के सिपाही हथियार लगाये खड़े थे। उसने ईश्वर का नाम लेकर एक मुट्ठी मिट्टी भूमि से उठाई और शत्रुओं पर फेंकी। विरोधी सब के सब ऊंघने लगे और गाफ़िल हो गये। खुदा का रसूल खुदा को याद करता हुआ उन्हीं के बीच से शांतिपूर्वक चला गया। सत्य है "जिसको भगवान रक्खे उसे कौन चक्खे"। सवेरे विरोधियों को इसकी सूचना मिली तो बड़े लज्जित हुये। आप तीन दिन मक्का के निकट एक खोह

(ग़ार) में अबूबक़ के संग ठहरे रहे। शत्रु इधर उधर तलाश कर निराश होकर बैठ रहे। यह हिजरत रबीउल अव्वल के महीना में हुई। यह महीना मुसलमानों की शक्ति की सालगिरह है। मदीना पहुँचते ही आपने धैर्य्यपूर्वक खुदा को याद करने लगे और मुसलमानों के जथ्थे को पूर्ण रूप से सुधार के कार्य खुदा की आज्ञा से आरम्भ कर दिये।

पहला कार्य यह किया कि एक मसजिद बनाई जिसमें खुदा की पूजा भी हो और मुसलमानों के मुक़दमे का न्याय भी हो। उनको शिक्षा भी दी जाय उनका आपस में मिलना-जुलना भी हो। मानो वह पूजा करने का घर भी था न्याय घर भी था, पाठशाला भी थी, उससे लगी हुई अपने रहने की एक कोठरी भी थी। जिसके अनुसार हर मसजिद आज तक नक़ल होती है।

दूसरा कार्य यह किया कि मक्का के बिना घर वालों को सुख देने के लिये आपने मदीना के मुसलमानों से कहा कि मैं मक्का तथा मदीना के मुसलमानों में भाईचारा देखना चाहता हूँ। जिस मक्का वाले को जिस मदीना वाले के साथ कह दूँ वह दोनों संग-संग सगे भाई के अनुसार रहेंगे। मदीना वाला मक्का वाले को घर में रक्खेगा। खाने का प्रबंध करेगा, उसके खाने की चेष्टा में सहायक होगा। मक्का वाला स्वयं कमाने की चेष्टा करेगा और मदीना वाले के साथ मिलकर उसे खर्च करेगा। मक्का वाले मेरी शिक्षा विशेष प्राप्त कर चुके हैं। वह अपने मदीना के भाई के संग हर घड़ी रह कर मेरी शिक्षायें

उसे सिखायेंगे। इस प्रकार आपने स्वयं एक मदीने वाले के संग एक मक्का वाला कर दिया।

खुदा के यहाँ से भी अब नमाज की आज्ञा हुई, बरत आवश्यक (फर्ज) हुआ और दूसरी शिक्षायें आने लगीं। हज़रत के मदीना जाने की सूचना सुनकर हब्श के अस्सी शरणार्थी भी मदीना चले आये। मक्का से भी कोई अस्सी (८०) मुसलमान मदीना गये थे। विरोधियों ने देखा कि अब इनको मदीनामें चैन तथा शक्ति प्राप्त है। तो डरे कि अगर उनको विशेष अवसर मिला तो अधिक शक्ति पालेंगे और हमारे जो व्यापारी मदीना होते हुये शाम को जाते है कहीं उन पर हमले कर कर के लूटना न आरम्भ कर दें। इस विचार से उन्होंने अपने व्यापारियों के संग सेना भी भेजनी आरम्भ कर दी। और अपनी तैयारियाँ भी अलग करनी आरम्भ कर दीं।

अल्लाह की आज्ञा हजरत को यह मिली कि अब हम तुमको लड़ाई करने की आज्ञा देते हैं। मक्का वालों का व्यापारिक काफला (झुंड) इस समय लाभ उठाकर लौट रहा है। तुम मुसलमानों को उनकी बाढ़ रोकने के लिये लेकर मदीना से निकलो फिर हम मुसलमानों से जो कार्य चाहेंगे करायेंगे आप मुसलमानों को लेकर व्यापारियों को छेड़ने निकले।

मक्का वालों ने अपने व्यापारियों की रक्षा के लिये एक हज़ार सवार हथियारबन्द मक्का से भेजा जो मदीना की ओर आ रहे थे। रास्ता में इक्का-दुक्का मुसलमानों को कतल

कर देते। व्यापार का काफला तो दूसरे रास्ता से बचकर निकल गया। परन्तु हजरत मुहम्मद को जब वे दोनों सूचनाएँ मिलीं तो आपने कहा कि यदि यह मक्का वाली सेना यहाँ तक आ जाय तो आओ फिर इसीसे निपट लिया जाय।

यही अल्लाह को भी स्वीकार था। अब थोड़ी दोनों सेनाओं की दशा भी सुन लीजिये मक्का वाले गिनती में एक हजार थे। सब सवार थे। सब हथियार से सुसज्जित थे। उनके पास चन्दा से विशेष लड़ाई का सामान भी संग था। खाने-पीने का भोजन भी बहुत था। मुसलमानों की गिनती सब मिलाकर ३१३ थी। उनकी सेना में दो-दो तीन तीन सिपाहियों के बीच एक सवारी, तीन-तीन चार चार आदमियों के बीच एक तलावर और इसी प्रकार भाले थे। स्वयं मुसलमान बरत से थे। इस कारण कि यह पहली लड़ाई रमजान (बरत रखने का महीना) में हुई। परन्तु अल्लाह को अपनी शक्ति दिखाना तथा रसूल को जिताना था। उन ३१३ ने एक हजार को इतना मारा कि उनकी सारी शक्ति टूट गई। उनके बड़े-बड़े वीर तथा घमंडी सत्तर की संख्या (७०) में कतल किये गये और ७० ही बन्दी बनाए गये। और शेष जीव लेकर सामान छोड़ कर भागे।

यहाँ पर दो बातें विचार करने योग्य हैं:—

(अ) क्या हजरत का यह युद्ध देश या धन पर अधिकार जमाने और अपने अधिकार को बढ़ाने के लिये था ?

(ब) एक हज़ार हथियारबंद का सामना १३ निहत्थे मुसलमान किस प्रकार कर सके ?

पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि हज़रत ने तथा उनके साथियों ने तेरह वर्ष अत्याचार और दुख सहे। उस समय भी कभी-कभी हजरत उमर, हज़रत हमज़ा, हज़रत साद जैसे वीर शांत रहकर अत्याचार सहने को अपना अपमान प्रतीत करते और बार-बार आप से कहते "हुज़ूर आज्ञा दीजिये तो इन दुष्टों का सामना करें और उनको सज़ा दें फिर हम नहीं या यह नहीं।" हुज़ूर इसके उत्तर में जो कहते उसका अर्थ यह है.—

"मैं न उन पर फटकार करने आया हूँ, न शाप ही देने, न उन पर कठोरता दिखाने। मैं तो उनमें तथा सारे संसार में ख़ुदा का धर्म फैलाने आया हूँ। मैं बादशाह नहीं हूँ नबी हूँ। मेरा कर्तव्य (Mission) यह है कि ख़ुदा के दासों को बुरे रास्ता से बचाऊं। मेरा कर्तव्य देश व माल लेना नहीं है। शक्ति प्राप्त करना, विरोधियों को कतल करना नहीं। मैं चाहूँ तो आज उन पर बिजली गिर पड़े, उन पर पर्वत फट पड़े, उनको पृथ्वी निगल जाय। वह काल में नाश हो जाय। परन्तु मुझे तो उनको सीधी राह पर लाना है। मेरे हाथ से विरोधी कतल कम होंगे मुसलमान विशेष होंगे। जो जन्म से ही भला है उसने पहले ही मेरा कहा स्वीकार कर लिया। कोई थोड़ा दुष्ट है उसने कुछ महीनों तक मेरी परीक्षा लेने के पश्चात मुझे माना। कोई इससे अधिक दुष्ट है उसने मोजज़े (अनहोनी

को होनी करना, जैसे चाँद को दो टुकड़े करना) देखकर खुदा की आज्ञा स्वीकार की। अब जो विशेष दुष्ट हैं। जो चैन नहीं फैलने देते, और फ़साद करते रहते हैं जब उनकी शक्ति का घमंड समाप्त होगा तब मानेंगे। खुदा मुझे आगे चलकर युद्ध करने की शक्ति भी देगा परन्तु मान बढ़ाने, बादशाह बनने, ऐश करने, शासन चलाने के लिये नहीं बल्कि शांति फैलाने, विद्रोह मिटाने, विरोधियों की शक्ति नष्ट करके उनका दिल नरमाने के लिये। क्योंकि विशेषरूप से मनुष्य उसी समय किसी के कथन को स्वीकार करते हैं अब यह ज्ञात हो जाता है कि हम उससे कम बली हैं। मैं अभी तुमको युद्ध की कैसे आज्ञा दे दूँ जबकि इस समय तक स्वयं मुझको ही ईश्वर की आज्ञा प्राप्त नहीं हुई है कि मैं युद्ध करूँ। अभी तो मुझको उसी दयालुता, उसी भाईचारे उसी शांति के साथ खुदा का धर्म लोगों में फैलाने की आज्ञा मिली है जैसी दयालुता और धैर्य की आज्ञा मुझसे पहले के पैगम्बरों अथवा अवतारों को। जैसे हज़रत नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा को धर्म-प्रचार के आरम्भ में मिला था। फिर जिस प्रकार उन लोगों को अंत में भगवान ने उन लोगों को शत्रुओं का सामना करने की शक्ति दी और उन पर विजय दी और उनको लाचार होकर शक्ति भी दिखानी पड़ी उसी प्रकार मुझे भी आज्ञा प्राप्त होगी परन्तु जब भी मिले। परन्तु भली भाँत स्मरण रक्खो कि इस लाचारी में शक्ति का प्रयोग केवल धर्म की रक्षा के लिये रहा

है। और इस समय भी होगा। बरन शक्ति से धर्म-प्रचार या राज्य प्राप्ति करने के लिये नहीं।"

इस प्रकार भली भाँति विचार कर लो कि आपका यह युद्ध अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये न था। अपना बदला लेने के विचार से भी न था। केवल शांति फैलाने के लिये था। फिर हज़रत मदीना में कौन सी ऐसी कारर्वाई मक्का वालों के विरुद्ध कर रहे थे जो उनको चैन न आया। और मक्का से ३०० मील दूर भी उन बेचारों को चैन से बैठने नहीं देना स्वीकार किया और तीन-चार सौ का सामना करने एक हज़ार हथियारबन्द सावर लेकर मदीना पर धावा क्यों बोला था।? यहीं तो विचार था कि वह तथा उनके साथी जो शराब तथा जुवा खेलने को रोकते हैं। लूट-मार को रोकते हैं। ज़िना को बन्द करने की चेष्टा करते हैं यह संसार से नष्ट कर दिये जायें और हमको इन दुष्टों, विद्रोहियों से रोकने वाला कोई न रहे। हम छोड़े हुये सांड़ बने रहें। जो मन में आये किया करें। सींग मार दें, जिस खेत में चाहें मुँह मार दें। हमको कोई रोके न। इस दशा में भी यदि मुसलमान युद्ध न करते तो दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह था कि धर्म तथा उसके प्रचारक सुरक्षित न रहें। और संसार से मिट जायें। इसका कारण धर्म की रक्षा, ईश्वरी शिक्षाओं और आज्ञाओं की रक्षा और उसके प्रचार करने वालों की रक्षा आवश्यकता से युद्ध की आज्ञा प्राप्त हुई। इसी को "जिहाद" कहते हैं।

दूसरे कथन का उत्तर यह है कि कोई संसारिक बुद्धि तथा संसारिक गणित इन दोनों सेनाओं का सामना बराबर का नहीं ठहरा सकता। सत्य तो यह है कि हजरत मुहम्मद की सेना को सचमुच हार जाना था परन्तु एक बुद्धिमान ही इस भेद को भली भाँति जान सकता है कि जब हजरत हृदय से विद्या फैलाने उठे थे तथा इस रास्ते में उन्होंने कठिनाइयाँ भी सही थीं तो फिर विद्या के दूत जो इस भूमंडल में अपने-अपने कार्य में लगे हैं उनका साथ युद्ध के क्षेत्र में काहे न देते? जब आप हृदय से शांति स्थापित करना चाहते थे तथा आपने बलिदान भी किये थे तो शांति के देवताओं को उनकी सहायता करना आवश्यक था। जब आप हृदय से सत्य तथा न्याय फैलाने की चेष्टा में थे तो कोई कारण नहीं जान पड़ता कि शांति के देवता भी इस युद्ध में आपकी सहायता न करते। आप उपकार तथा भाई-चारा, दया तथा जन-सेवा का प्रचार करने उठे थे। और स्वयं आपका ध्यान इन बातों पर था। तो बिना शंका, उपकार और दया आदि के देवताओं को भी इस युद्ध में आपकी सहायता करनी पड़ी। मित्रो! मेरा यह कथन बकवास नहीं है बल्कि इतिहास में और कुरआन में लिखा है कि शत्रु खुली आँखों देख रहे थे कि मुसलमानों की ओर हजारों की संख्या में सिपाही खड़े हैं और युद्ध कर रहे हैं। तो वह निराश होने लगे, उनके हृदय टूटने लगे। यह खुदा ने आकाश से देवता भेजे थे जो मुसलमानों की ओर

होकर युद्ध कर रहे थे। ख़ुदा पर विश्वास करने के पश्चात यदि कोई हृदय से उपकार तथा भलाई का प्रचार करने उठे और कुछ बलिदान करके अपने खरे होने का परिचय भी दे तो फिर भगवान की ओर से हर समय ऐसे पवित्र मनुष्य की सहायता के लिये सदा से आकाश से दूत, देवता आ रहे हैं और रहती दुनियाँ तक आते रहेंगे।

हम चूँकि धार्मिक युद्धों का विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं करेंगे इसलिये हमने ऐसी एक घटना का वर्णन, उसका कारण तथा उसका फल लिख दिया।

अध्याय ७

स्वभाव

हज़रत चालीस वर्ष के थे जब आपको नबी होने का पद मिला, जब आपकी आयु तिरपन वर्ष की हुई तो आपने विवश होकर मक्का छोड़ा, आपकी कुल आयु तिरसठ (६३) वर्ष की हुई। अंत के कुल दस वर्ष आप मदीना में रहे। इसी दस वर्ष में आपने ख़ुदा की आज्ञा से मुसलमानों को जीवन बिताने की उच्च शिक्षा दी। उनको सभ्यता सिखाई, उनके बीच का झगड़ा मिटा कर उनको प्रेम के बंधन में जोड़ दिया। विरोधियों ने कोई ३० बार ईश्वर के धर्म और धर्म वालों को मिटाने की चेष्टा की, परन्तु एक दो बार ही हल्की सी हार

हुई। सो भी मुसलमानों ही की गलती से। सारी लड़ाइयों में मुसलमान जीते। इस दस वर्ष में इसलाम की सेना ३१३ से ७० हज़ार तक और मुसलमानों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार तक पहुँची। इस बीच आपने अपने ऐलची बारह राज्य के शाशकों के पास ईश्वर का सन्देश देकर भेजे जिनमें बहुतेरे मुसलमान हुए कुछ ने कर देना स्वीकार किया, कुछ ने स्वीकार न किया जो नष्ट हुये। इस बीच आपने देश वालों की बड़ी संख्या को लिखना-पढ़ना सिखाया। इतने ही समय में आपको विभिन्न युद्धों में २८ दास और ११ दासियाँ मिलीं। आपने उनको स्वतंत्र करके उनको स्वभाविक अधिकार—सब के बराबर होने का दिया। इसी समय में आपने अपनी स्त्रियों के बीच .खुदा के सन्देश द्वारा .खुदा का सन्देश पहुँचाने के विचार से देश की रीत के अनुसार तेरह निकाह (विवाह) किये, जिनमें चार का आपके सामने ही देहान्त हो गया। नौ आपकी मृत्यु के समय तक जीवित थीं। फिर जब .खुदा की आज्ञा मिली कि कोई मुसलमान चार पत्नी से अधिक नहीं रख सकता। तो सब मुसलमानों ने चार पत्नियों को रख कर शेष को तिलाक़ (छूट दा) दे दिया। परन्तु आपकी पत्नियाँ चूँकि .खुदा की आज्ञानुसार सारे मुसलमानों की "मातायें" हो चुकी थीं। इस कारण से आपको आज्ञा मिली कि केवल तुमको इस क़ानून के कारण आज्ञा है कि कुल पत्नियाँ पहले के समान अपने पास रक्खो परन्तु अब निकाह न करो।

इस बीच में अनेक प्रान्त विजय हुये। यहाँ तक कि मक्का भी विजय किया गया। अर्थात् ८ हिजरी में जब आपकी आयु ६० वर्ष की थी मक्का वालों ने संघ की और वह प्रतिज्ञा तोड़ दी जो दो वर्ष पूर्व किया था। इस खुले विरोध पर उनको दंड देने के विचार से रसूल मदीने से १२ हजार भले लोगों की सेना लेकर मक्का पर चढ़ाई करने चला। यही घटना है जिसका वर्णन आज भी ईसाइयों की इन्जील में लिखी है। शब्द यह हैं:—

"वह प्रतिज्ञा का रसूल......फ़ारान पर चमका शेयर से उठा। वह बारह हज़ार क़ुद्दूसियों के संग नगर में घुसा—"

यह घटना रमज़ान ८ हिजरी का है। इस दिन दो तीन मनुष्यों के अतिरिक्त कोई हत्या नहीं हुई। उस दिन की दो घटनायें आश्चर्यजनक हैं।

पहली घटना—मक्का के सेना-नायक अबू सुफियान थे। उन्होंने हज़रत के विरोध में कोई कसर नहीं उठा रक्खी थी। आपका सामना करने के लिये बराबर युद्ध में सेनायें लेकर आते। जनता को आपके विरोध में साहस देते। परन्तु जिस दिन मक्का विजय हुआ। सब मक्का वाले तथा स्वयं अबू सुफियान बहुत डर रहे थे कि आज हम लोगों की जान न बचेगी। परन्तु हज़रत ख़ुदा के रसूल थे कोई संसारिक शासक न थे। आप दया, धर्म करने, तथा क्षमा का पाठ पढ़ाने आये थे। आपने ढिंडोरा पिटावा दिया कि "जो क़ाबा

में शरण ले उसको शरण, जो हथियार डाल दे उसको शरण, जो अपने घर के द्वार बन्द कर ले उसको शरण, अबू सुफियान को और जो उनके घर में शरण ले उसको शरण !" इतना उपकार देखकर अबूसुफियान मुसलमान हो गये। प्राण के शत्रुओं को ऐसी साहस से शरण देना केवल रसूल ही का कार्य था कोई अन्य शासक या बादशाह नहीं कर सकता।

दूसरी घटना—आप मक्का में जब विजय करते हुये पधारे तो आप गरदन झुकाये थे। घमंडी बादशाहों की रीति सर उठाकर, क्रोध भरा रूप बना कर प्रवेश करने की है। कहने का अर्थ यह है कि आपने गरदन झुकाये अपने मालिक को याद करते और उसको धन्यवाद देते तथा, उसका गुन गाते हुये प्रवेश किया और सीधे पवित्र क़ाबा में पधारे। वहाँ सबसे पहला कार्य आपने यह किया कि वहाँ जितनी, मूर्तियाँ छोटी बड़ी थीं उनको निकलवा दिया। दीवालों पर जितने चित्र थे उनको मिटवा दिया। और क़ाबा जब साफ हो गया तो आपने एक ईश्वर की पूजा अपनी रीति के अनुसार की। आपका सिद्धान्त यह था कि इस क़ाबा को हजरत इब्रहीम ने ख़ुदा की आज्ञानुसार ईश्वर की पूजा के लिये बनाया था। इसमें ख़ुदा की विन्ती और उसकी पूजा होगी। यह बुत जो किसी प्राचीन सज्जन मनुष्य का नाम जीवित रखने के लिए बनाये गये। यह तो स्वयं मनुष्य थे। खाने-पीने के भिखारी, मल-मूत्र का दोष रखने वाले, पिता और पुत्री, पती और पत्नी आदि

के बन्धनों में जकड़े हुये, जीवन तथा मरण के क़ानून में बंधे हुये थे। उनसे प्रार्थना करना, इच्छायें पूरी होने की आशा रखना, क्षमा माँगना किस प्रकार उचित हो सकता है। विचार करो स्वयं उनकी भावनायें, उनकी इच्छायें कौन पूरी करता था। बस जो उनकी इच्छायें पूरी करता था अर्थात् .खुदा (भगवान) वह आज भी जीवित हैं। उसीने उनको भी जन्म दिया था, उसीने हमको भी जन्म दिया है। उसीसे भयभीत होना, उसीसे मांगना उचित है।

आप .खुदा की पूजा कर चुकने के पश्चात क़ाबे की दीवार से पीठ लगाकर बैठ गये। और वह रईस, घमंडी, काफ़िर सरदार आपके संमुख एक एक करके पकड़ कर लाये गये। जिन्होंने आपको मार डालने का प्रयत्न किया था। जिन्होंने आपके परिवार का बाईकाट करके तीन वर्ष आपको तथा आपके साथियों को हर वस्तु के लिये तरसाया था, जिन्होंने आपकी डगर पर कांटा बिछाया था, जिन्होंने आपको पत्थरों से घायल किया था।

हज़रत ने एक बार उनको अपने सदा के हंसमुख रूप से देखा और पूछा "बताओ! आज मैं तुम्हारे संग कैसा व्यवहार करूँ"? वे सब भय और लज्जा सहित बोले "ऐ मुहम्मद! तुम हमारे सज्जन भाई और भतीजे हो। हमको तुम्हारे उपकारों से दया की आशा है।" हज़रत बोले, । "मैं ख़ुदा का नबी हूँ, दया करने, दया का पाठ पढ़ाने, और ख़ुदा का धर्म

और उसका संदेश संसार वालों में फैलाने आया हूँ। जाओ तुम सब को क्षमा करता हूं तथा स्वतन्त्र करता हूँ" उन लोगों के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। उन्हें यह स्मरण था कि आज से इक्कीस वर्ष पूर्व हज़रत ने जब नबी होना घोषित किया था उस समय वह अकेले थे। हमने उनको लोभ भी दिया, धमकी भी दी, उनके विरुद्ध साज़िश की, उनसे तीन गुनी चार गुनी सेना से चढ़ाई भी की, उनको ज़हर भी दिया, परन्तु उनका बाल बाँका भी न कर सके। उनके संगतियों को गर्म लोहों से दागा, मारा-पीटा परन्तु उनसे अलग न कर सके। उनके संगती बढ़ते ही गये। उनकी शक्ति अधिक होती गई। अवश्य यह सत्य पर हैं। अवश्य खुदा उनके संग है। इसमें कोई शंका नहीं कि यह ख़ुदा के नबी हैं और अवश्य उनकी रीति, सभ्यता, उनका व्यवहार तथा बरताव हमसे कहीं अच्छा है। न्याय की बात यह है, हमारा हृदय भी यही कहता है। इसको न मानना और हठ किये जाना महापाप है। अंत में वह सब के सब प्रसन्नतापूर्वक इसलाम धर्म स्वीकार करने पर तैयार हुये। आपने निकट की एक टेकरी पर चढ़कर सब को इकत्रित किया और उनसे इसलाम के निम्नलिखित नियम कहलाये:—

१—मैं ख़ुदा को एक जानूंगा, उसकी जाति में किसी को शरीक न करूँगा। अर्थात् दो या दो से अधिक खुदा कभी न मानूंगा खुदा की विशेषताओं में भी किसी को

शरीक न करूँगा। अर्थात् यह न मानूँगा कि जीवित करने, रोगों से अच्छा करने, मारने, मानतायें पूर्ति करने, धन देने, पुत्र देने का कार्य ईश्वर के अतिरिक्त कोई और भी करता या कर सकता है। यह भी कि मैं .खुदा के अतिरिक्त किसी का आज्ञा पालन न करूँगा। न अपने हृदय के कहने पर न बिरादरी के कहने पर।

२—मैं (हज़रत) मुहम्मद को सच्चा नबी मानूँगा अर्थात् उनका कहना मानूँगा उनके कहने तथा करने ही के अनुसार जीवन व्यतीत करूँगा। यह भी की सदा हज़रत मुहम्मद की सहायता करूँगा।

३—मैं .खुदा के सभी नबियों को, सभी फरिशतों (दूतों) को सभी आकाश की पुस्तकों को सच्चा जानूँगा। क़यामत (संसार के अंत होने का दिन) के आने को, मरने के पश्चात् जीवित किये जाने को, हिसाब किताब अच्छा बुरा बदला, स्वर्ग तथा नरक को भी विश्वासपूर्वक जानूँगा।

४—मैं दिन में पाँच वक्त की नमाज़ (.खुदा की प्रार्थना), वर्ष भर में रमज़ान के एक पूरे मास का व्रत (रोज़ा) माल होने पर २½ प्रतिशत ईश्वरी टेक्स (ज़कात) हैसियत होने पर आयु भर में एक बार की क़ाबा की यात्रा (ज़ियारत) अपने ऊपर आवश्यक और अपने लिए लाभदायक जानूँगा और उनको कभी न छोड़ूँगा।

५—मैं आज से चोरी, डाका, ज़िना, शराब, जुवा, क़तल,

जादू, किसी को बुराई की तुहमत लगाने, लड़कियों को कतल करने या जीवित गाड़ने, कम तौलने आदि से बचते रहने का वचन देता हूँ और अपने सब पूर्व पापों की भगवान से क्षमा मांगता हूँ। स्त्री हो तो इतना वचन और भी दे कि वह किसी के मरने पर शोक मनाने, विलाप करने तथा छाती पीटने से बचेगी।

मक्का की विजय के दो वर्ष पश्चात आपको बुखार आया, सर में दर्द हुवा, चौदह दिन तक बीमार रहे, यहाँ तक रबीउलअव्वल (अरबी महीने के नाम) के महीना में सोमवार के दिन दोपहर से पहले मदीना में आपका स्वर्ग-वास हुवा (आप पर अल्लाह का लाखों दरूद व सलाम)।

सब के अंत में अब हम आपका हुलिया, आपकी कुछ आदतें और आपकी कुछ घटनाओं का वर्णन करेंगे :—

हुलिया—आपका क़द बीच का था अर्थात् न नाटे थे न लंबे, आपका चेहरा चमकदार, लाली मिला हुवा सफेद था। सर बड़ा तथा सुन्दर था आप अपने सर के बाल को कभी कान की लौ तक बढ़ाते, कभी गरदन तक और कभी कांधों तक। गरदन ऊँची, माथा ऊंचा और खुला हुआ था। आँखें सुरमगीं, भवें लंबी परंतु दोनों अलग-अलग। नाक ऊँची तथा लंबी। दहाना खुला हुआ, दांत मिले हुये तथा मोती जैसे चमकीले। सीना चौड़ा सीना और पेट पर बुड़री तक बालों की एक बारीक धारी। शरीर न दुबला मोटा। हाथ तथा पैर में गोश्त, पीठ पर दोनों कंधों के बीच

में गोलाई से कुछ उठा हुवा गोश्त के समान था जो एक सुन्दर मुहर के समान प्रतीत होता था।। यह नबूवत की मुहर थी अर्थात् आप नबूवत अंतिम नबी (ख़ुदा का सन्देश लानेवाले) थे। आप पर नबूवत अंत हुई थी और नबूवत की फेहरिस्त को समाप्त करके उस मालिक अर्थात् ख़ुदा ने मुहर लगा दी।

आदतें :—आप अपने कार्यों को स्वयं अपने हाथ से कर लेते थे। अपने वस्त्रों को सी लेते थे। पेबन्द या जोड़ लगा लेते थे। बकरी का दूध दुह लेते थे। घर में झाड़ू दे लेते थे। दूसरों को प्रणाम (सलाम) पहले स्वयं करते थे। जब कोई हाथ मिलाता तो जब तक वह हाथ स्वयं न हटाता आप अपना हाथ उसके हाथ में दिये रहते। आप बहुत लज्जा वाले थे। आप अपनी हानि पर किसी से बदला नहीं लेते थे। आपने किसी दास को किसी अपराध पर न कभी मारा न ख़फ़ा हुये। जब कोई बात करता तो आप उसकी ओर से मुँह न फेरते। कभी किसी गरीब फ़क़ीर को उसके निर्धन होने के कारण छोटा न समझते। आप कभी झूठ नहीं बोले। बस्ती के छोटे बच्चों से दयालुता तथा प्रेम से बातें करते। उनको चुमकारते, बस्ती भर की ग़रीब दुखिया स्त्रियाँ दासियाँ बांदियाँ आपके निकट अपने काम से बिना झिझक आतीं और कहतीं कि मेरा अमुक काम है। चलकर कर दीजिये। आप तुरन्त खड़े होते और उसका कार्य करने जाते। आप रास्ता चलते तो सहाबा (शिष्यों) से आगे होकर नहीं बल्कि साथ मिले-

जुले। आप जिधर से जाते उधर आपकी पवित्र शरीर से एक प्रकार की बढ़िया सुगन्ध फैल जाती जिससे सब पहचान लेते कि हुजूर इधर से गये हैं। आपकी सभा में किसी की निन्दा या किसी के भेद की चर्चा नहीं होती थी। आप हर ग़रीब की दावत (निमंत्रण) को अवश्य स्वीकार करते तथा उसके घर जाते। आप साथियों में बैठते तो पैर न फैलाते। अपने दासों की सेवा स्वयं भी कर दिया करते। अधिक परिश्रम के कार्य उनसे न करवाते बल्कि स्वयं करते। अर्थी (जनाज़ा) के संग जाते, उस पर नमाज़ पढ़ते और उसको गाड़ कर फिरते। आप बीमारों की दशा पूछने जाते यहाँ तक कि कई बार आप अपने यहूदी, ईसाई पड़ोसी की दशा पूछने गये। किसी सभा में जाते तो जहाँ जगह मिल जाती वहीं बैठ जाते। किसी विशेष खास जगह बैठना आपको न भाता। सब आपका आदर करने खड़े होते तो आप उनको इससे रोक देते। परन्तु दूसरे का आदर करने स्वयं खड़े होते। जीवन भर कम्बल या टाट पर सोये। तकिया चमड़े की होती जिसमें वृक्षों की छाल भरी होती। सादा वस्त्र पहनते। एक कुरता, एक लुंगी, एक पगड़ी जिसके नीचे एक पतली टोपी होती, पैर मे एक चप्पल बस कुल वस्त्र इतना ही होता। हाथ में छड़ी अथवा कमान अवश्य रखते और दूसरों से उसके रखने को कहते। तीर चलाना, घोड़े पर चढ़ना, दौड़ना आदि मरदाना कसरतों में स्वयं भी प्रेम था और दूसरों को प्रेम दिलाते और कहते कि खेलने को बस यह खेल अच्छे हैं।

आपने एक बार निशाना लगाने का अभ्यास करने को अपने संगतियों की दो टोलियाँ बनाई और मैच कराया और स्वयं भी एक ओर हुये। इसके अतिरिक्त आपने घुड़दौड़ का मुक़ाबला भी कराया। आप पशुओं पर स्वयं भी दयालुता तथा प्रेम का व्योहार करते थे और दूसरों को आज्ञा भी देते थे। जानवरों के कान तथा दुम काटने की रीति को बन्द किया और दागने की रीति भी बन्द की। सवारी पर काठी तथा ज़ीन लगाकर देर तक खड़ा रखने को रोका। जानवरों का आपस में लड़ाना आपने बुरा बताया।

१—एक समय की घटना है कि आप चादर ओढ़े नमाज़ पढ़ने खड़े हुये कि इतने में एक अरब का देहाती आया और उसने आपकी चादर पकड़ कर खींची जिससे उसका कनारा आपकी गरदन में रगड़ खाने लगा और आपको दुख पहुँचा आपने उससे प्रश्न किया। क्या है? उसने कहा मुझे एक आवश्यकता आ पड़ी है। उसकी पूर्ति कीजिये। आपने नमाज़ पढ़ना रोक कर उसका काम कर दिया।

२—आपके एक सहाबी (शिष्य) किसी लड़ाई पर गये थे। आप बराबर उनके घर प्रति दिन जाते। स्त्रियों से पुछवाते और जो कार्य होता उसको पूरा करते।

३—एक बार एक यात्रा में संगतियों से थोड़ा अलग एक वृक्ष के नीचे सो रहे थे कि एक शत्रु ने देख पाया और दबे पांव आकर आपके सर के पास खड़ा हो गया। आपकी आँख आहट से खुल गई। उसने कहा' 'बताओ, अब कौन तुम्हें मेरी तलवार से बचायेगा। आपने शांतिपूर्वक उत्तर दिया "खुदा, रक्षा करेगा"। आपकी इस सन्तुष्टता और इस उत्तर से वह घबरा कर कांपने लगा और तलवार उसके हाथ से छूट कर गिर

गई। आपने तलवार उठाई और उसे ऊँचा करके पूछा, "अब तुम बताओ तुमको कौन बचायेगा।" उसका विश्वास ख़ुदा पर नहीं था। इस कारण उसके मुँह से निकला तो यह निकला कि "कोई नहीं"। आपको उस पर दया आई आपने कहा, "मुझे किसी" की जान लेने नहीं भेजा गया है बल्कि मैं दया सिखाने आया हूँ।

इस साहस के साथ दया करने देख कर वह आपके पैरों पर गिर पड़ा और मुसलमान हो गया।

४—एक समय एक काफ़िर आपका मेहमान हुआ। उसका विचार आपको दुख देना था। आते ही दूध माँगा। आपने एक बकरी दुह कर उसे दिया। उसने पीकर और माँगा आपने दूसरी बकरी को दुह कर उसे दिया। उसने पीकर और माँगा। इसी प्रकार सात बकरियों का दूध दुह कर उसे दिया और वह पी गया। आप उसी प्रसन्नता से उसे पिलाते रहे। रात को सोकर सबेरे जब उठा तो उसका हृदय हज़रत मुहम्मद के व्योवहार से ऐसा प्रभावित हुआ कि तुरंत मुसलमान हो गया।

५—एक बार एक काफ़िर आपसे मिलने मसजिद में आया। आपके बाहर आने में थोड़ी देरी हुई तो वहीं मसजिद में पेशाब करने बैठ गया। इतने में आपने निकल कर देखा और आपके सहाबा की भी दृष्टि उधर गई। सहाबा तो उसे डांटने और चिल्लाने लगे। परन्तु आपने कहा, "चुप रहो पिशाब तो कर लेने दो।" जब वह पेशाब कर चुका तो आपने उसे दयालुतापूर्वक कहा यह पूजा-घर है यहाँ ख़ुदा की पूजा होती है। यहाँ गंदगी न करनी चाहिये। यह कह कर आपने पानी मंगा कर उसके पेशाब को बहाया और धोया।

६—एक बार एक यहूदी आपको दुखी करने और सताने

के विचार से आपका मेहमान हुवा-आपने उसकी बड़ी आवभगत की और भोजन कराया वह जितना खा सकता था उससे अधिक खा गया। जिससे हज़रत और उनके घर वाले भूखे रह जायें। आप बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसे खिलाते रहे। रात को वह आपके घर ही सोया। अधिक भोजन करने के कारण उसका भोजन न पचा तो उस दुष्ट ने वहीं आपकी कोठरी में हर स्थान पर टट्टी कर दिया। सवेरा होने से पहिले ही चुपके से वहाँ से चल दिया। परन्तु अपनी तलवार भूल गया। कुछ दूर जाने पर तलवार जो याद आई तो लौटा। सहाबा (शिष्यों) ने उसे पकड़ कर आपके सम्मुख खड़ा किया। तो वह देखता क्या है कि हुज़ूर स्वयं अपने हाथों से उस के मल को हटा रहे हैं और त्योरी पर बल तक नहीं। आपके संगतियों ने कहा कि दीजिये हम इसको साफ़ कर दें। तो आपने उत्तर दिया वह मेरा मेहमान था। उसकी सेवा मेरा कर्तव्य है। इस बरताव को देख कर वह यहूदी पुकार उठा बिना शंका के मैं स्वीकार करता हूँ कि आप अल्लाह के नबी हैं और मुसलमान हो गया।

७—एक बार एक मनुष्य ने आकर अपनी कुछ आवश्यकतायें आपसे कहीं आपने कहा इस समय मेरे पास तो कुछ नहीं है परन्तु तुम अपनी आवश्यकता कहीं से उधार लेकर पूरी कर लो। मैं बहुत थोड़े दिनों में अपने पास से चुका दूँगा। उसने कहीं से उधार लिया और आपने उसे चुकाया (आप पर ख़ुदा के लाखों दरूद और सलाम)
